मन्नू भंडारी के कहानियों में चित्रित स्त्री समस्याएं('त्रिशंकु' कहानी संग्रह के संदर्भ में)

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

अमृता कांता ओशेल्कर

अनुक्रमांक: 22P0140004

PR Number:201901606

मार्गदर्शक

मनिषा गावड़े

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक:

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, मन्नू भंडारी के कहानियों में चित्रित स्त्री समस्याएं ('त्रिशंकु' कहानी संग्रह के संदर्भ में) is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms. Manisha Gaude and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Amrita Kanta oshelkar

Seat no:22P0140004

Date: 22/04/2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report मन्नू भंडारी के कहानियों में स्त्री समस्याएं ('त्रिशंकु' कहानी संग्रह के संदर्भ में) is a bonafide work carried out by Ms Amrita Kanta oshelkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Ms . Manisha Gaude

Date: 22/04/2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean,SGSLL,Goa University

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

school stamp

Date: 22/04/2024

Place: Goa University

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA
Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

(Accredited by NAAC)

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/262

Date: 09/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Amrita Kanta Oshelkar, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 20 Hours & 59 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Manisha Gaude .

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	I,II
	अनुक्रम	III,IV,V
	प्रस्तावना	VI,VII,VIII
1	आधुनिक युग में भारतीय स्त्रियों की समस्याए .1.1 कन्या भ्रूण हत्या 1.2 स्त्री स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं 1.3 विवाह और स्त्री समस्या 1.4 शिक्षा और स्त्री समस्या 1.5 स्त्री का आर्थिक संघर्ष 1.6 राजनीति और स्त्री समस्या	1-23
2	2.मन्नू भंडारी :व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2.1व्यक्तित्व 2.1.1 जन्म और बचपन 2.1.2 पारिवारिक जीवन	24-37

	2.1.3 शिक्षा 2.1.4 लेखन 2.1.5 मन्नू भंडारी का विवाहित जीवन 2.1.6 पुरस्कार 2.1.7 मृत्यु 2.2 कृतित्व 2.2.1 कहानी संग्रह 2.2.2 उपन्यास 2.2.3 नाटक 2.2.4 बाल साहित्य	
3	मन्नू भंडारी के कहानियों में चित्रित स्त्री समस्या ('त्रिशंकु' कहानी संग्रह के संदर्भ में) 3.1 पारिवारिक जीवन में स्त्रियों के संबंधों के टूटने, बिखरने की समस्या 3.1.1 घरेलू स्त्रियों की समस्या 3. 2 कामकाजी महिलाओ की समस्या 3.3विवाह को लेकर स्त्रियों की समस्या 3.4 अकेलेपन की समस्या 3.5 स्त्रियों की स्वतंत्रता 3.6 महिलाओ में आदर की समस्या	38- 63

4	मन्नू भंडारी की भाषा शैली 4.1 भाषा 4.1.1 उर्दू शब्दों का प्रयोग 4.1.2 संयुक्त शब्दों का प्रयोग 4.1.3 पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग 4.1.4 अंग्रेजी के शब्द 4.1.5 मुहावरे 4.1.6 अपशब्द 4.2शैली 4.2.1विवरणात्मक शैली 4.2.3 वर्णनात्मक शैली 4.2.4संवाद शैली 4.2.5 व्यंग्यात्मक शैली 4.2.6आत्मकथात्मक शैली	63-83
	उपसंहार	76-79
	संदर्भ	80-83

प्रस्तावना

श्रीमती मन्नू भंडारी हिंदी लेखन के क्षेत्र में एक महान कहानीकार , उपन्यासकार, नाटककार के रूप में प्रचलित हैं। मन्नू भंडारी ऐसी लेखिका है जो पाठको के समक्ष समाज की वास्तविकता को उजागर करती है। मन्नू भंडारी अपने जीवन में स्त्रियों के अस्तित्व, उनके अधिकारों के लिए,उनके जीवन में सुधार लाने के लिए अपना लेखन कार्य करती हैं। मन्नू भंडारी का लेखन स्त्रीवादी ही रहा है। स्त्रियों के हक के लिए वह लिखा करती है।जब मैंने शोध कार्य का निश्चय किया तब मुझे स्त्रियों की समस्या यह विषय को चयन करना था तब मुझे महसूस हुआ कि, जिस तरह, मन्नू भंडारी अपनी कहानियों में, साहित्य में, स्त्रियों पर लेखन किया है वैसे किसी और ने नहीं किया हैं। मन्नू भंडारी का स्त्रियों के प्रति जो दृष्टि कौन है वह अन्य विद्वानों से अलग है, इसलिए मैने मन्नू भंडारी को इस शोध कार्य में चुना है। मेरे इस शोध प्रबंध का शीर्षक है मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री समस्याए जिसमे 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह को लेकर शोध कार्य किया गया हैं। जिसमे स्त्रियों कि समस्या,कौनसी चुनौतियां उनका समक्ष अति हैं इनपर विस्तार से जानने का प्रयास किया गया है।

इस शोध कार्य में मेरा प्रथम अध्याय हैं आधुनिक युग में स्त्रियों की समस्याएँ पर करूंगी जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, और मशीन के आने

से स्त्रीयों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनके बारे में जाना जाएगा। द्वितीय अध्याय में उनका व्यक्तित्व और कृतित्व पर बात कि जाएगी जिसमें उनका जीवन परिचय माता-पिता, विवाह ,जीवन, शिक्षा ,पुरस्कार ,रचना आदि उसकी जानकारी दी जाएगी। तृतीय अध्याय में मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्रियों को किन समस्या का सामना करना पड़ता है उसमें बारे में जाना जाएगा। चतुर्थ अध्याय में उनकी भाषा शैली में किस तरह भाषा में बदलाव आया. कौन सी चुनौतियां आई है, भाषा में किन शब्दों का प्रयोग किया गया हैं, उनके बारे में लिखा जाएगा और अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा। आगे जाकर कोई भी मन्नू भंडारी पर शोध कार्य कर सकता है क्योंकि उन्होंने स्त्रियों कि समस्या को समाज के सामने रखने की कोशिश की है।

यह शोध कार्य में प्रेरणा मुझे मेरे माता और पिताजी से मिली जो हमेशा ही मुझे आगे पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं उनका कहना है कि जितना मैं पढ़ूंगी उतनी ही सफलता मुझे मिलेगी इसी मूल्य शब्दों के कारण मुझे शोध में रुचि हूवी इस संकल्प को कार्यरूप प्रदान करने के लिए में मेरे मार्गदर्शक मनीषा गावड़े जो शणै गोयबाव भाषा और साहित्य सकाय हिंदी अध्ययन शाखा गोवा विश्वविद्यालय की प्राध्यापक का धन्यवाद करती हूं। जिन्होंने विषय सुझाव और समय- समय पर अपने बहुमूल्य सुझावों से

मेरा मार्गदर्शन किया हैं। साथी हिंदी अध्ययन शाखा के सभी प्राध्यापकों के प्रति मेरा कृतज्ञता व्यक्त करती हूं कि प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी सहायता की हैं।

1) प्रथम अध्याय:आधुनिक युग में भारतीय स्त्रियों की समस्याएँ

भारत में आधुनिक युग की शुरुवात 19 वी सदी से अब तक चली आ रही है। सामान्य मानव के जीवन में काफी सुधार आया हैं मनुष्य काफी प्रगति कर रहा हैं। आधुनिक युग में आते हुए भी हम देख सकते हैं कि स्त्रियों की समस्याए है वह चली आ रही है। भारतीय स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में कई समस्याएं हो सकती हैं, जैसे कि उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज में असमानता, स्त्रियों का शोषण, उनपर हों रहै अत्याचार ऐसे अनेक समस्याओं का सामना उनको करना पड़ता हैं। आधुनिक नारी स्वतंत्र है वह समाज के सभी बंधनों से मुक्त होती है। आज की नारी पुरुषों पर निर्भर नहीं रहती वह आत्म निर्भर होती है वह स्वतंत्रता चाहती है। पर वह पुरुष प्रधान मानसिकता का शिकार होती जाती हैं। " युगों से भारतीय समाज में नारी को गृहिणी पद पर ही प्रतिष्ठित किया गया। लेकिन आधुनिक भारत में पराधीनता, शोषण, कुरीतियों आदि के विरुद्ध चलने वाले राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक आंदोलनों ने अन्य पीड़ित वर्गों के साथ नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की समस्या को भी उठाया"[1] आधुनिक युग में हम देख सकते है कि नारी की स्तिथि निरंतर बदलती हैं। आज नारी सिफ गृहिणी के रूप मैं नहीं बल्की

आत्मनिर्भर है। वह शिक्षा प्राप्त कर रही है, अपने निर्णय खुद से लेने लगी है और अगर वह घर पर अकेली है तोह वह अपने घर को भी अकेले संभाल सकती है। पर सामाजिक, राजनीति का प्रभाव से उनपर शोषण अत्याचार,कुरीतियों का दबाव उनपर होता हुवा दिखाई देता है। आधुनिक नारी स्वतंत्र है पर वह समाज का सभी बंधनों से मुक्त है ऐसा हम के नहीं पा रहे है यह एक बड़ा प्रशन खड़ा करता हे, आज नारी पुरुष का भोगय , उसके मनोविनोद का साधन बनकर नही रहना चाहती पर जब भी वह अपने हक ,उसका अस्तित्व का लिऐ विद्रोह करती दिखाई देती है तब पुरुष प्रधान मानसिकता उनको रोकता हूवा दिखाई देता है।

महादेवी वर्मा का कहना है जब नारियां उनकी समस्या को दूर करने की शुरुवाद अपने घर से करेंगी अपने हक की लिए वह लड़ना सिख लेगी तब ही समाज उनके हक के लिए विचार करेगा. “महादेवी वर्मा का नारी चिंतन समाज केन्द्रित है, फलतः तटस्थ और निष्पक्ष है। वे नारी जीवन की विडम्बनाओं के लिए पुरुषों को ही दोषी नहीं ठहराती, बल्कि महिलाओं को भी समान रूप से उत्तरदायी ठहराती है”[12] स्त्रीयों की समस्या का कारण केवल पुरुष नहीं है बल्कि स्त्रियां भी उतनी ही अपनी स्थिति के लिऐ जिमेदार है। भारतीय समाज में

स्त्रियां अपने हक के लिए बोलती है, वह अपने हक के लिए आवाज उठाती हैं तब उनका परिवार में उनको कहा जाता है की वह तो पराया धन हैं अपना हक पा क्या करेंगी उसको शादी करके दहेज लेकर दूसरो के घर जाना होता है । इस तरह स्त्रियो को पराया समझा जाता, इसी मानसिकता का शिकार वोह हर जगह होती हैं, अगर समाज में उसे अधिकार चाहिए तो उसके लिए उसे खुद ही लडना होगा तभी स्त्रीयों की समस्या मे हमे सुधार आता हुवा दिखाई देगा. “भारतीय संविधान में,“महिलाओं को और पुरुषों के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। महिलाओं को समानता का अधिकार प्रदत्त करता है, सभी नागरिकों को रोजगार का समान अवसर देता है चाहे महिला हो या पुरुष.”[3] यह नियम महिलोवो की समानता उनका सुरक्षा का लागू किए ताकि वो जीवन बेहतर बनाए , स्त्रियां की समस्या कम हो , फिर ऐसी स्त्रियां होती है उनको पता नही हो उनका हक के बारे में वह हर जगह उनको संघर्ष करना पड़ता उनकी समस्या कोई बदलाव आता हुवा नहीं दिखाई देता है। .

भारतीय समाज में महिलाओं को देवी के रूप में पूजा जाता है हालांकि आज इस स्त्री का शोषण होता है उनपर अत्याचार किया

जाता है। जिस तरह समाज प्रगति करता है उसी तरह स्त्रियों की समस्या भी बढ़ने लगती हैं। ऐसा माना जाता है कि समाज को पुरुष और स्त्री दोनों ही मिलकर बनाते हैं पर यह समाज सिर्फ पुरुष को ही प्रधानता देता है, सिफ पुरुष को ही समान दर्जा दिया जाता हैं। जब भी समाज की आर्थिक स्थिति कम होती है, गरीबी होती, है बेरोजगारी होती है तो यह दोनों की समस्या बन जाती है पर इसका ज्यादा प्रभाव स्त्रियों पर ही पड़ता है। भारतीय समाज की परंपरागत व्यवस्था में मुखिया जीवन पिता पति और पुत्र की संरक्षण में जीवन व्यतीत करती रहती है। भारतीय समाज में पुरुष और स्त्रियों को सम्मान दर्जा दिया गया है पर इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते हैं कि विकास और सामाजिक स्तर पर स्त्रियां आज भी पुरुषों से पीछे है। भारतीय संविधान में महिलाओं को कमजोर समझ जाता है। पुरुषों की यही मानता होती है कि उनकी मदद के बिना स्त्रियां कुछ भी नहीं कर सकती है। आज समाज में महिलाओं की मुक्ति के लिए बदलाव लाना काफी चुनौती का काम माना गया है।

1.1.) कन्या भ्रूण हत्या की समस्या

कन्या भ्रूण हत्या का मतलब जब मां के पेड़ में जो बच्चा है उसको मार डालना अगर बेटी होती तो वह उसे मार डालते हैं ताकि उनका

परिवार दहेज से बच सके , समाज में आज भी स्त्रियों को भोज समझा जाता है। इसलिए स्त्रीयों को पेट में ही मारने का प्रयत्न किया जाता है। लिंग की जांच के बाद बालिका को हटाया जाता है उसे ही भ्रूण हत्या कहते हैं। “गरीब और समृद्ध घरों में दहेज प्रथा को स्त्रियों की हत्या का बहुत बड़ा कारण समझा जाता है”[4] आज समाज में जब भी कोई स्त्री शादी होती है तब उनसे बहुत ज्यादा दहेज मांगा जाता है। जब लड़की वाले उनकी मांगे पूरी नहीं कर पाए तो वह शादी तोड़ देते हैं इसके कारण लड़की की शादी रुक जाती है इसकी कारण लड़की वालों को लज्जा से जान लेने की नौबत आती है इसलिए वह कन्या की भ्रूण हत्या करते हैं। पर कभी-कभी पैसों की कमी ,गरीबी और पालन पोषण में कमी होने के कारण वह भ्रूण हत्या करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। और लड़की की पैदा होने से पहले ही हत्या करने की कोशिश की जाती है। और कुछ लालची लोग भी होते हैं जो पैसे के लालच में यह काम करते हैं। इसके कारण कन्याओं को भ्रूण हत्या का शिकार होना पड़ता है।

“घरेलू हिंसा का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है। जो स्त्रियाँ आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर हैं वे भी स्वतंत्र रुप से फैसले नहीं ले सकतीं और तब उन स्त्रियों की स्थिति की कल्पना कीजिये जो अपने पति

के अधीन हैं और जिन्हें अपने फैसले लेने का कोई अधिकार नहीं है"[5] समाज में जब स्त्रियों की शादी होती है तब बहुत ज्यादा उनसे दहेज मांगा जाता है जब वह उनकी मनोकामनाएं पूर्ण न कर पाती तो वह शादी तोड़ देते हैं इसके कारण स्त्री की शादी रुक जाती है। तब उस स्त्री को लज्जा के कारण जान देने पड़ती है। और जो औरत मां होती है उसने भी उनकी शादी में भी दहेज दिया होता है, इसलिए इसलिए उनको पता होता है कि दहेज में कौन सी समस्या आती है, और वह मोटी रखम चुका नही पायेगी इसलिए वह कन्या की भ्रूण हत्या करती है।

1.2) स्त्री स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

स्त्रियों को स्वास्थय संबंधित अनेक समस्या जेलनी पड़ती है। जैसे की माहवारी की समस्या, कड़ी धूप में मेहनत के कारण उनका शरीर कमजोर महसूस करता है,गर्भवती महिलाओं में पोषण की कमी होती हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि महिला पुरुषों से की तुलना में अधिक समय तक जीवन जी सकती है क्योंकि वह सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है। महिलाओं का स्वास्थ्य पोषण संबंधित स्थिति भारत में पुरानी प्रथाओं के कारण महिलाओं का स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति बेहतर होती जाती है

ग्रामीण महिलाएं गर्भवती होती है तो भी उनसे सभी काम कराया जाता है। और उनको खाने के लिए पर्याप्त पोषण और पौष्टिक आहार भी नहीं मिलता है इसके कारण उसके गर्भ में पल रहा बच्चा और औरत काफी कमजोर हो जाती है। ऐसी समस्या स्त्रियों के समक्ष आती है। "आमतौर पर कम वजन वाले शिशु कम पोषण और खराब स्वास्थ्य वाली माताओं से पैदा होते हैं। एनीमिया की घटना स्तनपान कराने वाली महिलाओं के बाद गर्भवती महिलाओं और किशोर लड़कियों में सबसे अधिक पाई गई हैं"[6] गर्भवती महिलाओं को पोषण ना मिलने पर औरत को एनीमिया नाम की बीमारी हो जाती है। महामारी विज्ञान के अध्ययनों से पता चलता है कि 50% महिलाएं एनीमिया का शिकार होती रहती है गर्भावस्था स्त्रियों को पोषण की जानकारी न होने के कारण स्त्रियों में अनेख बीमारियां होती है इसलिए पोषण गर्भवती महिला के लिए महत्वपूर्ण होता हैं। कुपोषण स्त्रियों के स्वास्थ्य को लेकर काफी समस्याएं पैदा करता है। स्त्रियों में प्रोटीन ,विटामिन और खून की कमी के कारण वह कुपोषण का शिकार बनती हैं। जब एक गर्भवती महिला को कुपोषित होती है तो वह उसके बच्चे के लिए भी खतरा साबित होती है। गरीबी और आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण स्त्रियों को खाने

पीने को कुछ नहीं बचता हैं, इसके कारण वह कुपोषित रह जाति हैं।महिलाओं को माहवारी के कारण काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। गांव में जो स्त्रियां होती है वह गरीब होती है उनकी आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण उनके पास पैड खरीदने के पैसे नहीं होते थे तो वह कपड़ों का इस्तेमाल करती है इसके कारण उनका स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है और उनको रोगों से जूझना पड़ता है।

1.3) विवाह और स्त्री समस्या

आधुनिक युग में स्त्रियां शिक्षा तथा कामकाज के कारण घरों से बाहर निकलती है इसके कारण स्त्रियां पुरुषों के साथ मिलकर काम करती है। एक ही व्यक्ति के साथ कही सालों तक रहने से,उनके साथ काम करने से आकर्षण होना स्वाभाविक होता है। जब किसी भी औरत को प्रेम होता है तब वह समस्या बन जाती है। समाज स्त्रियों के प्रति अपनी धारणा कभी बदलना नहीं चाहता है, और जब स्त्री और पुरुष प्रेम करके विवाह करना चाहते हैं तब उनके बीच में जाति धर्म आते हैं, और उनके प्रेम विवाह को रोका जाता हैं। जब कोई उनके विवाह को स्वीकार नहीं करते तब वह परिवार के विरुद्ध

जाकर शादी करते हैं। इस रिश्ते को परिवार में कोई भी मान्यता नहीं देते हैं और स्त्री को ही दोषी मानते हैं। "भारतीय समाज में रूढ़ि, परंपरा के विरुद्ध कदम उठाने वाले प्रेमी-युग्म के प्रेम-विवाह में भी बाधाएँ उपस्थिति होती हैं। जाति-धर्म के विरोध में किए जाने वाले प्रेम-विवाह भी स्त्री-पुरुष के जीवन में अनेक समस्याएँ उपस्थित रहती हैं"[7] जाति धर्म इन प्रथाओं के आड़ में प्रेम विवाह को कभी मानता नहीं मिलती और उनका वैवाहिक जीवन कभी सुखी नहीं रह पाता है। विवाह स्त्री और पुरुष का पवित्र बंधन होता है जब शादी होती है तब हम अपने मन में आदर्श विवाहित जीवन का चित्रण करते हैं। स्त्रियों को विवाह संबंधित अनेक समस्याएं उनके सामने आती है जैसे कि दहेज, सौंदर्य चारित्रिक दोष, उच्च शिक्षा, परिवार में उपयोगितावादी वृत्ति आदि समस्या दिखाई देती है। वैवाहिक जीवन में जब अपनी कोई कमजोरी होती है तो उसे छिपाने के लिए हम हमेशा दूसरों को दोषी ठहराते हैं। पुरुष हमेशा अपने समस्याओं का दोष अपने साथी पर डालता है। इसके कारण उनके विवाहित जीवन में अनबंध पैदा होती है। आधुनिक युग में नारी शिक्षा का प्रचार और प्रसार

बड़े पैमाने पर करती है। प्रिया शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे तक पड़ती है। और उच्च शिक्षा प्राप्त करती है। इसके कारण स्त्रियों की शिक्षा ही उनके विवाह में बाधा बनकर खड़ी होती है। लड़की अधिक पढ़ाई करे तो उसे उसके अनुरूप लड़का ढूंढने में बाधा आती है। दूसरी और उच्च शिक्षित युवक अपने बराबर युवती को पत्नी रूप में स्वीकार करने के पक्ष में नहीं होता है।

1.4)शिक्षा और स्त्री समस्या

भारत में स्वतंत्रता के बाद अंग्रेजों के आने से स्त्रियों की शिक्षा पर काफी प्रभाव पड़ा है स्त्रियों की शिक्षा से क्रांतिकारी परिवर्तन आते हुए दिखाई देते हैं इसमें संबंधित स्त्रियों की समस्या भी चली आ रही है। स्त्रियों में शिक्षा की कमी का मुख्य कारण आर्थिक स्थिति और गरीबी है , जब उनके घर कमाने का कोई साधन नहीं होता एक ही व्यक्ति काम पर जाता हैं तो उनको शिक्षा लेने के अलावा काम पर जाना होता है। इसके कारण वह अशिक्षित रह जाती है। पर अगर उनके परिवार में बेटा होता है तो उसे पहले पढ़ाया जाता है। पितृसनात्मक समाज यही मानता है कि स्त्रियों का काम यही

है कि वह घर पर रहकर चूल्हा चौका और बच्चों को संभाले। उसके अलावा उनका मानना है कि स्त्रियों को शिक्षा का कोई अधिकार नहीं होता है वह तो सिर्फ पराया धन होता है वह किसी के दिन शादी कर के दूसरों के घर जाना होता है। इसलिए उनको पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं रखी जाती है।

भारतीय सरकार ने स्त्रियों की शिक्षा के लिए नियम लागू किया जिसमें "1958 में सरकार ने महिला शिक्षा पर एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया, जिसकी सभी सिफारिशें स्वीकार कर ली गईं। इन सिफारिशों का सार यह था कि महिला शिक्षा को भी पुरुष शिक्षा के सामानांतर पहुँचाया जाए"[8] यह नियम स्त्रियों के शिक्षा के लिए बनाया गया था फिर अधिकतम स्त्रियागर के काम में ही व्यस्त होती थी और उन नियमों के बारे में उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं प्राप्त न होने का कारण वह अशिक्षित रह जाती थी। बालिकाओं की शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है कि बालिकाओं को बालको के समान शिक्षा प्राप्त करने के अवसर नहीं मिल पाते। हमारे देश में शिक्षा के सभी स्तरों पर एवं लगभग सभी पक्षों पर बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा में असमानतायें पाई जाती

है। स्कूल या कॉलेजेस में हम देख सकते हैं कि वहां पर अध्यापकों की कमी है यह स्त्री समस्या का मुख्य कारण है विद्यालय में। अध्यापकों की कमी होती है तो ज्यादा स्त्रियां नहीं आ पाती है, उनकी सुरक्षा भी उतनी नहीं होती है,इसके कारण स्त्रियों विद्यालयों में आने से डरती है। उनको परिवारों में सहमति भी नहीं होती है इसलिए भी एक कारण होता है कि वह शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है तकनीकी विकास भी स्त्रियों पर एक समस्या बनता जा रहा है। तकनीकी विकास के कारण हम देख सकते हैं की जितनी सुख सुविधा पुरुषों को मिलती है जितनी जानकारी उन्हें मिलती है उतनी स्त्रियों को नहीं मिलती है। जानकारी को प्राप्त करने के लिए वह स्त्रियों को काफी समस्या आती हुई दिखाई देती है इसके कारण वह शिक्षा प्राप्त करने से पीछे रह जाती है। “आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने नारी स्वतंत्रता को बहुत अधिक बढ़ावा दिया है किन्तु समस्त नारी की शिक्षा का प्रतिशत अभी बहुत ही कम है। भारत के गाँवों में बालिकाओं को जो शिक्षा दी जा रही है, उसका केन्द्र बिन्दु बालिकाओं को आदर्श गृहणी बनाना है। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि बालिकाओं को

शिक्षा ऐसी दी जाए जिससे वे स्वतंत्र होकर अपनी अस्मिता, अस्तित्व एवं स्वाभिमान की रक्षा के लिए समर्थन बन सकें" [८] आधुनिक युग में जब शिक्षा का प्रचार प्रसार किया गया तब काफी स्त्रियां शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित होगी पर पुरानी पीढ़ी की सोच के कारण स्त्रियां घरों से बाहर नहीं निकल पा रही थी। पुरुषों का यही मानना था कि अगर स्त्रियां पढ़ाई करने जाएगी तो घर को कौन संभालेगा ,इसी मानसिकता के कारण स्त्रियां शिक्षा के क्षेत्र में काफी कम दिखाई देती है। आज भी स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है ,शिक्षा का महत्व परिवारों को समझना पड़ता हैं तब जा कर उनको अनुमती मिलती हैं। ऐसे भी लोग होते हैं जो स्त्रियों को जीवन में आगे पढ़ने के लिए नहीं देना चाहते हैं। वह उसका विरोध करते हैं। इसके कारण परिवार वाले, स्त्रियों को घर से बाहर भेजने के लिए डरते हैं क्योंकि उनके साथ कोई कुछ गलत ना हो जाए, और कुछ हो गया तो समाज के सामने काफी बदनामी होगी इस डर के कारण वह स्त्रियों को शिक्षा के लिए घर से बाहर नहीं भेजते हैं। इसलिए आज स्त्रियों की शिक्षा के क्षेत्र में संख्या काफी कम हैं।

ग्रामीण जीवन में शिक्षा की भी समस्या दिखाई देती है। ग्रामीण नगरों में उतनी कक्षाएं और विद्यालय नहीं होती है। बहुत ही कम होती है और उन विद्यालय में सीफ पुरुष ही जाते हैं स्त्रियों को नहीं भेजा जाता है। स्त्रियों की जल्दी शादी की जाती है। और लोग ऐसे ही मानते हैं कि स्त्रियों को शिक्षक शिक्षा प्राप्त करके क्या करेगी इसलिए उनको शिक्षा पर प्राप्त करने के लिए भी नहीं भेजा जाता है, इसलिए महिलाएं ग्रामीण जीवन में अशिक्षित रह जाती है। ग्रामीण जीवन में स्त्रियों की स्थिति आज भी सदियों पुरानी ही रही है ग्रामीण जीवन में स्त्रियां काफी संघर्ष करती है। जंगलों में लड़कियां काटकर चराती है घर आती है गायों को चरण घर को चरण, संभालना बच्चों और पति को संभालना आदि काम ग्रामीण स्त्रियां किया करती रहती है। समाज में उनके लिए जो कायदे नियम निश्चय किए हैं उनके अधिकारों का उनका कोई जानकारी नहीं होती तो उनके समस्या का हल नहीं निकाला जाता है।

1.5)राजनीति और स्त्री समस्या

भारत के स्वतंत्रता के बाद भारत में राजनीति का परिवेश देखने को मिला राजनीति में पहले सिर्फ पुरुष ही शामिल होते

थे। पर १७५७-१८५६ शक्त के आंदोलन के संचालन में महिला भी शामिल हो गई थी। जितनी महिलाओं की दिलचस्पी राजनीति में बढ़ने लगी उतनी ही उनकी समस्याएं भी बढ़ने लगी राजनीति के क्षेत्र में सक्रीय महिलाओं को हिंसा, शोषण का शिकार होना पड़ता है इसके डर से महिलाएं राजनीति में अपना योगदान देने से डरती है। अन्य गांव में ग्रामीण जीवन में महिलाओं की शादी की जाती है उनको शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है क्योंकि यही मानसिकता होती है कि महिला शिक्षा प्राप्त करके क्या ही करेगी इसके कारण शिक्षित न होने के कारण उनको राजनीति में अपना योगदान देने से वह पीछे रह जाती है। पितृसत्तात्मक समाज मानता है कि महिलाएं राजनीति में जीत पाने के लिए योग्य नहीं होती। और उनकी यही धारणा होती है कि स्त्रियां सिर्फ घर का ही काम करनी चाहिए उसके बाहर उनकी कोई भूमिका नहीं है इस सोच के कारण स्त्रियां समाज में समानता नहीं मील पा रही है यह मुख समस्या उनके सामने आती हैं। राजनीति में आए नेताओं का औरत के प्रति अजीब सा रवैया होता है। अगर स्त्री उनकी पेशकश को ठुकरा दे और उन्हें टकरा जवाब दे तो वे उसके

विरूद्ध चरित्र हीनता का प्रचार करने लगते हैं। राजनीति में जब भी कोई स्त्री आती है। तब उनके खिलाफ उनके हिंसा होता है उनका शारीरिक और मनोवैज्ञानिक उनका शोषण किया जाता है क्योंकि राजनीति पर जब कोई महिला आती है वह इन विषयों पर चर्चा करती है जहां पर वस्तुओं के हक के लिए लड़की दिखाई देती है तब अन्य नेता होते हैं वह उनका विरोध करते हैं तब नेताओं को डर सताता है की कही उनके वोट उनसे छीन ना जाए या कहीं उनके पार्टी गिर ना जाए। चुनाव में जितने की आड़ में वह महिलाओं को धमकी देते हैं, उन पर अत्याचार करके उनको प चुप कराया जाता है। इस डर से महिलाएं राजनीति में शामिल नहीं होती। स्त्रियां जब राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करती है तब अन्य नेताओं को जलन होती है उसकी कामयाबी से उनको समस्या आने लगती है उन्हें डर लगता है कि कोई उनके जो बुरे काम है वह समाज के सामने आ जाएंगे। इसलिए वह नारियों को नीचे गिराने की कोशिश करता है। वह अन्य उच्च वर्ग के लोगों को पैसे देकर उन पर गलत इल्जाम लगाता है। ताकि वह राजनीति

में अपना ज्यादा योगदान ना दे पाए। पुरुष हमेशा ही नारी को आगे बढ़ने से रोकता हुआ दिखाई देता है।

1.6) सोशल मीडिया का महिलाओं पर प्रभाव

आज के आधुनिक युग में हम देख सकते हैं कि सोशल मीडिया समाज में लोगों के जीवन में मुख्य हिस्सा बनते जा रहा है। उसके माध्यम से लोगों में नई चेतना पैदा हुए लोग अपना शॉपिंग करते हैं, खाना ऑर्डर करते हैं ज्ञान प्राप्त करते हैं सभी काम सोशल मीडिया पर ही करते हैं। और अपना सब कुछ वहां पर शेयर भी करते हैं। इसका फायदा अन्य लोग उठाते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से हम हर एक काम सरलता से हो जाता है, पर जितने सोशल मीडिया के फायदे हैं उतने भी नुकसान भी है। सोशल मीडिया के माध्यम से ज्यादातर महिलाओं का ही शोषण होता रहा है। सोशल मीडिया के कारण स्त्रियों को अनेक समस्या झेलनी पड़ती है जैसे कि अत्याचार उनको ब्लैकमेल किया जाता है उनका फायदा उठाया जाता है। इनके जो नुकसान है ज्यादा स्त्रीयों पर ही होते हैं। सोशल मीडिया का महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव होता हुआ दिखाई देता है। सोशल मीडिया काफी लोगों में ग्रामीण क्षेत्रों

में महिला जो बुजुर्ग होती है उनका फायदा उठाया जाता है। बुजुर्ग महिलाएं जो अशिक्षित हैं उनको झूठा दिलासा दिया जाता है कि उन्हें धन संपत्ति प्राप्त मिली है और उनसे उनको ठक्कर उनके पैसे हड़प लिए जाते हैं।

सोशल मीडिया पर लड़कियां अपनी तस्वीर डालते हैं। और सोशल मीडिया पर वह शेयर करती है। जो फिर जो फर्जी लोग होते हैं वह उनकी तस्वीर लेकर गलत फोटो में डालते हैं और उनको ब्लैकमेल किया जाता है। और उनको पैसों के लिए धमकाया जाता है। स्त्रियों के लिए बड़ी मुसीबत साबित होती है। सोशल मीडिया के माध्यम से जो पुरुष उनके नियत खराब होती है वह बोली वाली लड़कियों को प्यार में फसाते हैं उनको गलत तस्वीर भेजने के लिए कहते हैं। और जब तस्वीर देखने के बाद वह बाजार में बेचते हैं लड़कियों से इस तरह शोषण किया जाता है और उन और मासूम लड़कियों को सताया जाता है। इन समस्या से स्त्रियों को सतर्क रहना चाहिए ताकि ऐसी समस्या उनके सामने न आए और कोई भी उनका फायदा ना उठाए जाएं , “अक्सर यह सुनाई देता है कि मीडिया ने भारतीय नारी की छवि के ताने-बाने को खुद-बुर्द कर दिया है। उन

लोगों का यह मत आंशिक रूप से सत्य हो सकता है किन्तु सारा दोष मीडिया पर मढ़ना उचित नहीं है"[९] मीडिया का कारण नारियों पर समस्या अति हुवि दिखाई देती है पर इसक दोष सिफ मीडिया पर नहीं है क्योंकि स्त्रियों को भी सोशल मीडिया पर ,अपना पोस्ट करते वक्त सिफ ऊनी लोगों को भेजना चाहिए जिस पर वोह विश्वास कर सकती हों पर आज कल की स्त्रियां सोशल नेटवर्क पर लाइए के चक्कर में सबके साथ अपने पर्सनल चीजे शेयर करती है फिर वो शोषण का शिकार होती दिखाई देती हैं। अगर स्त्रीयों ने सावधानी से कार्य किया होता तो वह सोशल मीडिया का शिकार नहीं होती इसलिए स्त्रियां भी उतनी ही जिम्मेदार है।

1.7) स्त्री का आर्थिक संघर्ष

भारतीय संस्कृति में स्त्री की समस्या पहले से ही चली आ रही है आज भारतीय संविधान में स्त्रियों को उनके हक और बराबरी देने की बात करता है। इसके लिए कई नियम भी बनाए गए हैं पर,कितने नियम लागू किए हैं यह विचारणीय पक्ष है। और हमारे देश में महिलाओं की स्थिति के लिए कितना मूलभूत सुधार आया हुआ है, आधुनिक युग में आज

भी हम देख सकते हैं की स्त्रियों की समस्या स्त्रियों की समस्या चली आ रही हैं,स्त्रियों पर खुले में शोषण और अत्याचार किया जाता है। आज भी स्त्री शोषण पर कोई आवाज नहीं उठाता है और कोई कुछ आवाज करता है तो उसे रोका जाता है। आज के युग में गर्भवती महिलाओं के पेट में भी स्त्रियों को मारा जाता है। स्त्रियों की हत्या की जाती है वहां से ही स्त्री संघर्ष शुरू होता हुआ दिखाई देता है।"जब तक नारी-लेखन अन्याय, अत्याचार का प्रतिरोध नहीं करता, नारी की सुरक्षा के लिए संघर्ष नहीं करता तब तक वह यथास्थितिवाद का पक्षधर ही होगा। नारी लेखन का सबसे अहम् दायित्व है नारी पाठिकाओं को झकझोरना, उनके परम्परित जर्जरित संस्कारों को तोड़ना जिनमें वे बुरी तरह जकड़ी हुई है। इसके बिना स्त्री समाज की सोच को नहीं बदला जा सकता"[10] संविधान में आज नारी को खुद के लिए अपने लिए ही। भारतीय संविधान में आज नारी को खुद ही अपने हक के लिए लड़ना पड़ेगा। शोषण का विरोध करना पड़ेगा , जब तक खुद ही नारी के अन्याय अत्याचार पर नहीं बोलेगी तो और उसका समर्थन भी कोई नहीं करेगा इसलिए स्त्रियों

ने अपने हक के लिए बोलना सीखना चाहिए। स्त्रियों के संघर्ष पर ज्यादा बात करनी चाहिए, तभी स्त्रियों की स्थितियों में सुधार आयेगा।

संदर्भ

1. कुमार शांति , भारतीय नारी और पश्चिमीकरण आर्य प्रकाशन मंडल, सरस्वती भंडार गांधीनगर दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013. पु. क्र (३०-३५)

2 लता कुसुम,महादेवी वर्मा की दृष्टि में भारतीय नारी की सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता पर चिंतन का मूल्यांकन, IJESRR, feb2014. (शोध आलेख)

3 वर्मा एस. भी, स्टेटस ऑफ वूमेन इन मॉडर्न इंडिया, पब्लिश बाय दीप ऐंड दीप पब्लिकेशन रजौरी गार्डन न्यू दिल्ली, संकरण 2005.

4.मॉड्यूल-Vमहिलाओं का सामाजिक स्तर, पुष्ट 163,https://www.nios.ac.in/media/documents/331coursehindi/Module_5/Lesson_34_A.pdf

5. वही पुष्ट - ९९-१२६

6 कौशल्या आर, मनोहरन एस. भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति-एक संक्षिप्त रिपोर्ट। MOJ प्रोटिओमिक्स

बायोइन्फॉर्म 2017;5(3):109-111. डीओआई: 10.15406/mojpb.2017.05.00162 , प्रकाशन 6अप्रेल2017

7 डॉ जाधव माधवी,मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्याये, विद्या प्रकाशन कानपुर,2007,पुष्ट११६

8 फिरोज खान सं० :डॉ एम . डॉ नियाज़ शगुफ्ता,नारी विमर्श : दशा और दिशा, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स , गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2010 पुष्ट 87

8 गुप्ता रमणिका, हादसे, राधाकृष्ण प्रकाशन अगस्त 2019 पुष्ट-२४५

9 डॉ मुन्दड़ा निशा, महिलाओ की छवी और मीडिया एक दुष्टिकोण , मुल्प्रसन : जुलाई सितम्बर २००६.

10 फिरोज खान सं० :डॉ एम . डॉ नियाज़ शगुफ्ता,नारी विमर्श : दशा और दिशा, आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स , गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2010 पुष्ट 76

2. द्वितीय अध्याय: मन्नू भंडारी: व्यक्तित्व एव कृतित्व

2.1) व्यक्तित्व

श्रीमती मन्नू भंडारी हिंदी लेखन के क्षेत्र में एक महान कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार का रूप में प्रचलित है। उनका लेखन कार्य अन्य साहितकारो से अलग है उनका जीवन में जोह भी घटनाए गड़ती थी उनका चित्रण वह अपना लेखन में किया करती हैं। उनके व्यक्तित्व का अलग पहलू थे कभी वो पितृसज्नात्मक समाज पर प्रहार करती तो कभी बाल साहित्य लिखा करती थी उनकी कहानियों में उन्होने स्त्रियों की दशा का चित्रण किया हैं। कहानियों के माध्यम से मन्नू भंडारी हमारे समक्ष सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। मन्नू भंडारी संवेदनशील व्यक्ति है क्योंकि स्कूल जीवन में उन पर आजादी के आंदोलन का प्रभाव पड़ चुका था, आजादी के आंदोलन में उनका काफी योगदान रहा था। फिर अध्यापिका के पद पर अपना लेखन कार्य शुरू किया। स्त्री और पुरुष के संबंध में उनकी समस्या के बारे में भी वह अपने साहित्य में लिखा करती थी। मन्नू भंडारी ने जीवन से जुड़ी हर पहलुओं को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है।

2.1.1)जन्म और बचपन

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, सन 1931 को भानपुर (मध्य प्रदेश) नामक छोटे से गांव में हुआ। मन्नू भंडारी ने अपने जीवन में अपने पिताजी सुख संप्रदाय से प्रेरणा ली थी , अपने पिताजी से प्रेरणा लेकर उसने शिक्षा प्राप्त की और एम ए तक अपनी पढ़ाई उसने जारी रखी फिर वो लेखन में अपना योगदान देने लगी उनके परिवार में जब आपसी वैचारिक की होती थी तो उसमें भी मन्नू भंडारी अपनी भाग लेती थी। और स्वतंत्रता संग्राम और उनके बारे में अपनी बात करती थी और बात करते-करते उनको राजनीति में रुचि बढ़ने लगी और उसमें अपना योगदान देने लगी। "मन्नू भंडारी जब बड़ी हुई तब वह किशोर अवस्था में चौराहे पर अपना भाषण देने लगी इससे उसके साहस से लोगों में लेखन के कार्य करने में वह प्रोत्साहित हुवि इससे उनको अपने जीवन में लड़ने की ताकत मिली"[१],उनके पिताजी को वह चौराहे पर भाषण देना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। पर अन्य लोग उनके भाषण सुनने आए और उनकी प्रशंसा करने लगे। तब उनके पिताजी उनको

प्रोत्साहित करने लगे। वहां से मन्नू भंडारी प्रसिद्ध लेखिका बन गई।

.2.1.2) पारिवारिक जीवन

मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपनी मां से स्नेह, पिता से मार्गदर्शन और शिक्षा, और दिशा प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त उनको अपने भाई बहनों से भरपूर लाड प्यार मिला है। उनका नाम महेंद्र कुमारी था पर प्यार से उन्हें मन्नू भंडारी कहते थे। फिर लेखन कार्य मे वह मन्नू नाम का इस्तमाल करने लगी थी और इसी नाम से लोग उन्हें जानने लगे। "मन्नू भंडारी "हिन्दी पारिभाषिक कोष" के आदि निर्माता, प्रतिष्ठित पत्रकार श्री सुख संपतराय की सबसे कनिष्ठ पुत्री के रूप में उत्पन्न साथ हुई"[12] मन्नू को अपने पिताजी से प्रेरणा मिली थी पर उनकी माता का भी उनका जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान था उनकी माता का नाम अनूप कुमारी था वह अशिक्षित थी। फिर भी उन्होंने अंतर जाति के विरोध नहीं किया उन्होंने उसे शादी के लिए कोई भी रोक-टोक नहीं की। उन्होंने अपनी बेटी के काम में कभी भी दकर्ल अंदाज हुई

कि नहीं दी मन्नू उनके घर के कामों में कभी भी मदत नहीं कर रही थी उसकी शिकायत उसकी मां ने कभी नहीं की। कभी-कभी मन्नू भंडारी भाषण देने घर के बाहर देर तक रहती थी फिर भी उसकी मां को उसे कभी भी शिकायत नहीं करती और कभी भी उसको रोका नहीं जाता था इसके कारण वह सफलता प्राप्त करने लगी। उनका परिवार सयुक्त मारवाड़ी परिवार था। इसके अलावा मन्नू भंडारी अपने दो भाई और दो बहनों के साथ रहती थी वह सभी उन्हें लेखन कार्य में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

2.1.3) शिक्षा

मन्नू भंडारी का शिक्षा प्राप्त करने का मुख्य कारण उनके पिताजी थे उनके पिताजी सुखसंपत राय को देखकर उनके लेखन से प्रेरित होकर उनका शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा मिली थी। मन्नू जी ने अजमेर के सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल से सन 1945 में मैट्रिक पास किया था। उन्होंने कोलकाता में बीए और बनारस में एमए किया था, पर यह पढ़ाई उन्होंने प्राइवेट की थी कॉलेज और यूनिवर्सिटी में नियमित छात्र के रूप में पढ़ाई न करने का उन्हें काफी दुख हो गया वह उनको

यह पढ़ाई उन्होंने सिर्फ डिग्री के पानी के लिए ही की थी। पढ़ाई के पश्चात उन्होंने लेखन कार्य में अपना योगदान देना शुरू किया बाद में 'मैं हार गई' यह उनके काफी प्रसिद्ध कहानी थी। फिर उन्होंने अनेक कहानियां लिखी जिसमें वह स्त्रियों से जुड़ी समस्या को सुलझाने का उन्होंने प्रयास किया। आगे जाकर उन्हें काफी प्रसिद्धि मिली। और आगे जाकर समाज और शिक्षा में वह अपना योगदान देना उन्होंने जारी रखा।

2.1.4) मन्नू भंडारी का वैवाहिक जीवन

मन्नू भंडारी ने राजेंद्र यादव से प्रेम विवाह किया था। अपने जीवन में उनका राजेंद्र के प्रति आदर और सम्मान था। राजेंद्र यादव शिक्षा सदन के अध्यक्ष थे। जब राजेंद्र यादव शोध कार्य (योग दर्शन और हिंदी साहित्य) करणी कोलकाता पहुंचे तब उनका परिचय भगवती प्रसाद जी से हुआ और उन्होंने तब उनको पुस्तकालय के अध्यक्ष बनने को कहा। वहां पर जब वह पुस्तकों पर चर्चा करते तब उनका परिचय मन्नू भंडारी से हुआ तो पुस्तक परिचय जीवन परिचय में परिवर्तित हो गया। फिर उनका विवाह 22 नवंबर 1959, में कोलकाता में

हुआ था। राजेंद्र यादव हिंदी के जाने-माने स प्रतिष्ठित लेखक थे , मन्नू भंडारी के पिताजी सुखसंपत राय जी को विवाह स्वीकार नहीं था क्योंकि वह अंतरजातीय विवाह के खिलाफ थे:अंत में उनका विवाह उनकी बड़ी बहन सुशील और उनके जीजा ने संपन्न कर दिया। अपने पति राजेंद्र यादव के बारे में मन्नू भंडारी लिखती है कि " मेरा और राजेन्द्र का सम्बन्ध जितना निजी और अतरंगता के दायरे में आता है, उससे कहीं अधिक लेखन के दायरे में आता है। लेखन के कारण ही हमने विवाह किया था... हम पति-पत्नी बने थे। उस समय मुझे लगता था कि राजेन्द्र से विवाह करते ही लेखन के लिए जैसे राजमार्ग खुल जाएगा और उस समय यही मेरा एकमात्र काम्य था। उस समय कैसे मैं यह भूल गई कि शादी करते ही मेरे व्यक्तित्व के दो हिस्से हो जाएँगे ... लेखक और पत्नी"[13] उनका कहना है कि उनका जीवन जितना निजी होता है उससे भी अधिक उनका जीवन लेखन दायरे में आता पर जब शादी हुई तब उनकी जिम्मेदारी बढ़ गई थी। उनका जो व्यक्तित्व है वह दो भागों में बढ़ गया था एक तो पत्नी और दूसरा लेखिका। और उनको लगा की शादी के बाद वह सिर्फ लेखन

में अपना योगदान ज्यादा दे पाए पर वह दोनों में ही व्यस्त रहने लगी और उनका काम पहले से और भी बढ़ने लगा था। फिर भी राजेंद्र उनको काफी काम में मदद करते थे। दोनों ने मिलकर एक इंच मुस्कान(१९६२) यह उपन्यास लिखा था ।

जैसे-जैसे वक्त बिता गया राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी के जीवन में खटास पैदा हुई। दोनों अपने कामों में व्यस्त होने लगे जब राजेंद्र दिल्ली गए तब वह पुस्तकों सूची बनाने में उनको मीता नमक लड़की मिली उससे दोस्ती हुई कुछ दिनों बाद उनकी दोस्ती गहरी हुई और उनका प्रेम हो गया। इसका शौक मन्नू जी को लगा। मन्नू भंडारी काफी दुखी रहने लगी। मन्नू ने अपनी शादी को बचाने की काफी कोशिश की पर वह असफल रह गई। फिर उनका प्रेम उनको काफी सताने लगा। इस वजह से नीचे दबकर वह नही रहना चाहती थी इसलिए उन्होंने राजेंद्र से अलग होने का निर्णय लिया। राजेंद्र ने उसे रोकने की काफी कोशिश की। पर मन्नू भंडारी नहीं मानी। फिर वह उनसे अलग हो गई , मन्नू को राजेंद्र से अलग होने के लिए 30 वर्ष लग गए क्योंकि " वह राजेंद्र यादव के प्रति कठोर हो पाने में स्वयं को असमर्थ पाती थी"[१४] मन्नू ने अपने

जीवन को संवारा और वह लेखन करने लगी और उसे उभरने लगी, उसके बाद उन्होंने काफी कहानी लिखी जो काफी प्रसिद्ध भी हो गई। उससे अधिक लड़कियां आकर्षित होने लगी उनके पास आने लगी इसके पश्चात उनोने अपना लेखन कार्य जारी रखा है।

2.1.5) लेखन

मन्नू भंडारी जाने-माने महान लेखिका भी है लेखिका होने के एक साथ वह एक पाठिका भी है उन्होंने अनेक महाविद्यालय में पढ़ाया है। जब मन्नू भंडारी ने लेखन कार्य शुरू किया तब उसे समय भारतीय समाज संक्रमण काल से गुजर रहा था परिवार में विघटन शुरू हो चुका था ऐसे समय पर मन्नू भंडारी ने लेखन साहित्य में सुधारवादी नजरिया लेकर लेखन किया, मन्नू भंडारी समाज में स्त्रियों के प्रति जो सोच है उस सोच को बदलना चाहती है। उनके मौलिक लेखन के विषय में राजेन्द्र यादव ने लिखा है- "प्लाट मन्नू के दिमाग में हमेशा ही बहुत मौलिक और सशक्त आते हैं, लिखने से पूर्व वह कई बार राजेन्द्र को सुनाती है। कहती भी जाती है कि मेरा प्लाट सुन कर तो तुम आत्महत्या कर लोगे, पर लिखती नहीं।

लिखने का उसका अपना तरीका है। खाने की मेज पर बैठकर रसोई में उचित आदेश देती हुई टिंकू को खेल में लगाकर पास बैठी हुई घर की सारी व्यवस्था देखती हुई वह कहानी लिखती ही रहती है, वैसे सांझ को नहा धोकर, एकदम धोबी के धुले सफेद कपड़े पहनकर बहुत अधिक चूने वाला पान खाते हुए लिखना उसे सबसे अधिक प्रिय है।

2.1.6)पुरस्कार

सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी को अपने जीवन में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनकी रचनाएं ज्यादातर लोकप्रिय होने के कारण उनको पुरस्कार मिलते थे। हिंदी का प्रसिद्ध उपन्यास महाभोज जो 1976 में प्रकाशित हुआ 'राजकुमार भुवालका' का पुरस्कार दिया गया उत्तर प्रदेश हिंदी संस्था द्वारा उनके महाभोज उपन्यास को पुरुस्कृत किया गया है। पुरस्कार की राशि६००० रूपये है।" शिमला के ऑल इण्डिया आर्टिस्टस ऐसोसियेशन द्वारा अखिल भारतीय बलराज साहनी स्मृति साहित्य प्रतियोगिता मन्नूजी को उनके रचनात्मक लेखन द्वारा मानवता के लिए 1982-83 का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अवार्ड तथा पीपल्स अवार्ड से सम्मानित किया

गया"[15] वर्ष 1976 में आपातकाल के दौरान मन्नू भंडारी ने 'पद्म श्री' तथा साहित्य कला परिषद् द्वारा प्रस्तावित पुरस्कार को न लेकर अपना विरोध दर्ज करवाया था।

2.1.7)मृत्यु

"मन्नू भंडारी की मृत्यु 15 नवंबर 2021 में 90 साल की आयु में हुई थी। उसे समय इंडियन एक्सप्रेस ने उनकी मृत्यु के बाद उन्हें "हिंदी साहित्य जगत की अग्रणी" के रूप में वर्णित किया गया था"[6]

2.2) कृतित्व

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात रचे गए साहित्य में मन्नू भंडारी का विशेष योगदान रहा है। मन्नू भंडारी ने अनेक रचनाएं रची है और उनको प्रकाशन में लाया है उनकी कहानिया, नाटक, उपन्यास अन्य विद्वानों से कम है पर उनकी रचनाएं अन्य विद्वानों से अलग होती है उनकी रचनाएं समाज के विविध पहलुओं कहानी उपन्यास नाटक से हमारे समक्ष लाने की कोशिश की है।.

मन्नू भंडारी जब साहित्य में कोई लेखन करती है तो वह अपनी जीवन से जुड़ी घटनाओं को याद करके उसका अनुभव

लेकर अपनी रचनाओं में लिखती थी,उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा भी है, 'एक कहानी यह भी' इस आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन के बारे में लिखा है। पर वह उसे आत्मकथा नहीं मानती है उनके अनुसार वह एक कहानी है। क्योंकि "वह मानती हैं कि इस रचना में मेरे अपनी जिंदगी के अनुभव के टुकड़े ही तो बिखेरे हैं। यह शुद्ध मेरी ही कहानी है और इसी में मुझे रहना था। जो कुछ मैंने देखा है, जाना, अनुभव किया, शब्दशः उसी का लेखा जोखा यह कहानी है"[७] इससे लेखिका इस बात को स्पष्ट करती है कि यह आत्मकथा नहीं है। इसलिए उन्होंने इस कहानी का शीर्षक एक कहानी भी रखा था लेखिका उनकी इस कहानी। जो उनका व्यक्तित्व और जीवन संबंधी बिखरे हुए पहलू थे। उसका चित्रण उन्होंने कहानी में किया है। पर उन समस्या को उन्होंने समझने की कोशिश नहीं की है, इसलिए वह बिखरी हुए हैं इसके कारण उसे आत्मकथा नहीं कहा जा सकता हैं।

2.2.1) कहानी संग्रह

मन्नू भंडारी के कुल मिलाकर 6 कहानी संग्रह प्रकाशित है उनका प्रथम कहानी संग्रह' में हार गई ' जो 1957 जो

राजकमल हर प्रशासन में हुआ था इसमें 12 कहानी संग्रहित है, उनकी दूसरी कहानी है' तीन निगाहों की तस्वीर 'जो 1959 में प्रकाशित हुई जिसमें आठ कहानी है। फिर 'यही सच है' जो 1966 में प्रकाशित हुई उसमें आठ कहानी संग्रहित है, ' एक प्लेट सेलाभ' यह कहानी 1968 में प्रकाशित हुई थी जिसमें नौ कहानी संग्रहित है। अगला संग्रह है' आखों देखा झूठ' जो 1976 में प्रकाशित है। इसमें बाल कहानी रची थी। और आखिरी कहानी संग्रह है ' त्रिशंकु 'जो 1978 में प्रकाशित हो गया जिसमें नौ कहानी संग्रहित है।

2.2.2) उपन्यास

मन्नू भंडारी के कुल मिलाकर पांच उपन्यास प्रकाशन में आए थे। एक इंच मुस्कान जो(राजेंद्र के साथ मिलकर की गई रचना) जो 1961में प्रकाशित हुई है। आपका बंटी 1971, महाभोज 1979, स्वामी 1982 .साहित्य के छेत्र में मन्नू भंडारी का उपन्यास विशेष रूप से लिऐ जाते है और उनका प्रमुख उपन्यास है आपका बंटी जिसमें दांपत्य जीवन के कारण बच्चों पर होने वाला प्रभाव पर बात की गई है।

2.2.3) नाटक मन्नू भंडारी के दो नाटक है' बिना दीवारों का घर' 1969 ,महाभोज (नाट्य रूपांतरण) 1983. महाभोज मन्नू भंडारी का काफी महत्वपूर्ण नाटक हैं इसमें राजनीति के परिवेष को दर्शाया गया हैं, बिना दीवारों का घर, यह संक्रमण काल का नाटक हैं, यह नाटक खास तौर पे स्त्री और पुरूष को संबोधित करता हैं।

2.2.5) बाल साहित्य

कलवा (बाल उपन्यास) 1971, आसमाता 1971, आखों देखा झूठ 1976. मन्नू भंडारी के बालसाहित्य काफी प्रचलित बाल साहित्य हैं, और यह साहित्य बच्चों के साहित्य हैं इसको पढ़कर बच्चो में जिज्ञासा पढ़ा होती और उनको पढ़ने में रुचि पेहधा होती हैं।

संदर्भ

1 मन्नू भंडारी सा साक्षात्कार पार्ट 1 (NCERT OFFICIAL) www.youtube.com

2 डॉ.वर्मा सुशील,आधुनिक समाज की नारी चेतना, आशा पब्लिशिंग कम्पनी बाईपास रोड, कमलानगर आगरा, संस्करण 1998, पुष्ट 5-8

3 भंडारी मन्नू ,'एक कहानी यह भी', राधाकृष्ण प्रकाशन स्पष्टीकरण से पुष्ट 9-15.

4 प्रो०शिवाजी देवरे, हिंदी आत्मकथा मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा प्रभा खेतान, विद्या प्रकाशन, प्रथम 2016, पुष्ट ६९

5 डॉ. वर्मा सुशील, आधुनिक समाज की नारी चेतना, आशा पब्लिशिंग कम्पनी बाईपास रोड, कमलानगर आगरा, संस्करण 1998, पुष्ट8.

6 सतपुते रिशब, मन्नू भंडारी का जीवन परिचय,बाय dilsedeshi.com.

7 प्रो० देवरे शिवाजी, हिंदी आत्मकथा मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा प्रभा खेतान, विद्या प्रकाशन, प्रथम 2016, पुष्ट 61

3.) तृतीय अध्याय: मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित स्त्री समस्याएँ ('त्रिशंकु' संग्रह के संदर्भ में.)

मन्नू भंडारी स्वातंत्र्योत्तर की कहानीकार हैं। उनकी प्रतिभा के कारण उनकी हर कृति और गद्य एवं पहचान अन्य विद्वानों से अलग है। श्रीमती मन्नू भंडारी हिंदी लेखन के क्षेत्र में महान कहानीकार के रूप में मानी जाती है। मन्नू भंडारी जब भी कोई कहानी लिखती है तो वह अपने जीवन से जुड़ी घटनाओं को याद करके उसका अनुभव लेकर अपनी रचनाओं में लिखा करती है। उनकी कहानियों से वह स्त्रियों के जीवन की समस्या को सुलझाने का प्रयास वह करती है। मन्नू भंडारी ने इन कहानियों के माध्यम से नारी के विविध पक्षों को हमारे समक्ष लाने की कोशिश की हैं। मन्नू भंडारी नारियों के मुक्ति के लिऐ लिखती है की जिस तरह पहले की रूढ़ि वाली परंपरा होती थी ,आज हमें नहीं दिखाई देती है। पुरानी पीढ़ी की समस्या तो कम हो गई आज भी हम देख सकते हैं कि स्त्रियों पर शोषण होता है , दहेज प्रथा की समस्या चली आ रही है। अगर कोई स्त्रियां काम करने जाती है तो उनको पुरुष प्रधान

मानसिकता का शिकार होना पड़ता है ऐसी समस्याएं दिखाई देती हैं।

मन्नू भंडारी के कहानियों में सामाजिक स्त्रियों की समस्याएं

स्वतंत्रता के पश्चात आधुनिक युग में आते हुए हम देख सकते हैं कि स्त्रियों की समस्याएँ चली आ रही है। आज समाज में स्त्रियां काफी प्रगति कर रही है। अपना जीवन को सुधारने में लगी है पर पुरुष प्रधान मानसिकता उन्हें समाज में आगे बढ़ने से रोकती हैं। उनको हमेशा ही यही डर सताता है कि कई वह उनसे आगे ना बढ़ जाए। वह चाहते हैं कि स्त्रियां सिर्फ घर तक ही सीमित रहे स्त्री चाहे घरेलू हो, कामकाजी महिला हो या शिक्षित हो या शादीशुदा औरत हो, स्त्रियों को हर जगह समस्याएं झेलनी पड़ती है। मन्नू भंडारी अपनी कहानियां उपन्यास के माध्यम से स्त्रियों की अलग दृष्टि को चित्रित किया गया हैं। मन्नू भंडारी समाज में स्त्री के व्यक्तित्व उसकी भूमिका, अस्मिता और सामाजिक जटिलता है में फसी स्त्री की स्थिति को समाज के समक्ष लाने की कोशिश की है। उनकी कहानियों के माध्यम से उन्होंने स्त्रियों की देहनिय

स्थिति को दर्शाया गया है। निम्नलिखित कहानियों में स्त्रियों कि चित्रित समस्याए

3.1) पारिवारिक जीवन में स्त्रियों के संबंधों के टूटने बिखरने की समस्या

भारतीय संस्कृति में परिवार का विशेष योगदान रहा है। आधुनिक काल में पारिवारिक संबंधों की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आज पारिवारिक संबंध पहले जैसे होते थे वैसे आज कम होते जा रहे हैं। कामों के कारण पैसों के कारण जमीन जायदात हड़पने के कारण स्त्रियों के संबंध टूटे हुए दिखाई देते हैं। स्त्रियां अगर अपने हक के लिए लड़ती है अपना, हक मांगने लगते हैं तो उसे दूर किया जाता है। सास और बहू में मतभेद दिखाई देती है। मन्नू भंडारी परिवारों के टूटने बिखरने की समस्याओं को अपने कहानियों में चित्रित करती है। 'त्रिशंकु' कहानी में तनु की मां खुले विचारों में विश्वास रखती थी। उसकी मां को तनु का अपने दोस्तों से बात करने में उसे कोई दिक्कत नहीं होती थी। तनु की मां जो है उन्होंने प्रेम विवाह किया था अपने पिताजी के खिलाफ जाकर। पर जब उनकी बेटी उनका अनुसरण करती है तो

उनकी मां पुराने विचार उनपर थोपने की कोशिश करती है। जब तनु को प्रेम हुआ था तब उसकी मां का रवैया उनके पिताजी की तरह बदल जाता है। इस तरह उनके परिवार में संबंध टूटने लगते हैं मां और बेटी में अनबंध आती हुई दिखाई देती है। ऐसा माना जाता है कि संयुक्त परिवार में सास बहू का संबंध सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। मन्नू भंडारी की कहानी 'एखाने आकाश नाई' इस कहानी में प्रीति नौकरी करती है पर उनकी सास का मानना है कि उनकी बहू ने उनकी सेवा करनी चाहिए। ऐसी अपेक्षा वह उनकी बहू से रखती है। "फलस्वरूप सास-ससुर-बहू संबंधों में ठंडापन और पति-पत्नी संबंध में असंतुलन पैदा होता है। परिवार की दीवारें मजबूत करने के लिए परस्पर सहयोग, सामंजस्य की आवश्यकता होती है, इसके अभाव में संबंध असंबंध में बदलकर परिवार की सुखद शांति मटियामेट होती है"[14]

'स्त्री सुबोधिनी' नामक कहानी है कहानी में ऐसे व्यतिवो के बारे में बताया गया है जो स्त्रियों को अपने फायदे के लिए उनका इस्तेमाल किया करते हैं। और उनको झूठा दिलासा दिलाते हैं कि वह उनसे शादी करेंगे। कहानी की मुख्य पात्र

'मैं' प्रौढ़ कुमारिका है और अपने ही कार्यालय के बॉस शिन्दे से प्रेम करती है। जबकि शिन्दे केवल उसके शरीर से खेलने के लिए प्रेम का नाटक करता हैं। जब अंत में शिंदे के पत्नी को पता चलता है तो वह उनसे दूर रहने की कोशिश करता है उससे बात नहीं करता है। अपने यौन संतुष्टि के लिए स्त्री का उपयोग किया जाता हैं। उसके भावनाओं के साथ खेला जाता हैं।

3.1.1) घरेलू स्त्रियों की समस्या

आज समाज काफी उन्नति कर रहा है आज समाज में स्त्री और पुरुष दोनों एक समान होते हैं । दोनों को एक समान दर्जा दिया जाता है और दोनों काम और शिक्षा में उन्नति कर रहे हैं इसके कारण जो घरेलू स्त्रियां थी वह काफी पीछे रह जाती है। उन्हें शिक्षित लोग जो होते हैं वह उन्हें अपने से कम समझते हैं उनका मजाक उड़ाया जाता हैं। और हर वक्त उन्हें नीचा दिखाने में लगे रहते हैं। घरेलू औरतें होती है जो बच्चों के काम में पति के काम में घर को संभालने में व्यस्त रहती है और अपने आप पर ध्यान नहीं रख पाती हैं। इसके कारण समाज उनको समान दर्जा नहीं देते हैं।'एखाने आकाश

नाइं' इस कहानी में स्त्रियों में पारिवारिक संबंधों की समस्या को दिखाया गया है। कहानी में संयुक्त परिवार के विघटन को प्रस्तुत किया गया है। घरेलू परिवार में स्त्रियों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है यह इन कहानी में चित्रित किया गया है। कहानी में लिखा वह अपने परिवार से दूर रहती थी जब लेकर काफी वक्त के बाद घर आती है उसे लगता है कि वह सबसे काफी दूर हो चुकी है और उसे अपने ससुराल में उस अनजान सा लगने लगता है। जब परिवार में एक दूसरे से दूर रहती है तो उनमें बातचीत न होने के कारण परिवार में अनभन होती है, परिवार में एक दूसरे के लिए लगावह कम हो जाता है।कहानी में जो स्त्री पात्र है वह सिर्फ घर कामों में फंसी हुई होती है दिखाई देती है जैसे कि उनकी अम्मा वह घर में रहती है इसके कारण वह चिड़चिड़ा स्वभाव उनका होता है। फिर जो प्रीति होती है वह काम पर जाना चाहती है शिक्षा प्राप्त करना चाहती पर उसे पैसों की कमी के कारण या उनके भाइयों को पढ़ने के कारण उसे काम पर जाने के लिए अनुमति नहीं होती है। तो वह घर पर ही होती है। बाकी की जो स्त्रियां होती है वह घर के कामों में ही व्यस्तरहती

थी। परिवार को संभालने में उनका पालन पोषण करने में वह घर पर ही रहती थीं इसके कारण वह घर अपने जीवन में कुछ अच्छा नहीं कर पाती और वह अन्य स्त्रियों से पीछे रह जाती है।

“अकेले होते ही लेखा ने महसूस किया, जैसे इन सबके बीच वह बहुत परायी है। उस घर की सदस्य होकर भी वह घर से अलग है। यहाँ आकर उसे बराबर ही लगता रहा है जैसे वह बहुत फिजूल खर्च है; जैसे उसका बहुत-सा कर्तव्य इस घर और घर के व्यक्तियों के प्रति है, पर जिसे वह पूरा नहीं कर रही है”[2] कहानी में लेखा को लगता है कि वह सबसे टच में है सब की जानकारी उसे है पर ऐसा नहीं है वह अपने घर ससुराल आई तब से उसे अंजनभी सा लगने लगा परिवार से दूर है ऐसे उसे महसूस होने लगा। उसे महसूस हुआ कि उसका परिवार से वह कहीं ना कहीं दूर से आई है और उनके परिवार टूटा हुआ दिखाई देता है। जब वह वहां आई उसे लगने लगा कि वह उनकी समस्या को सुलझाने नहीं पा रही है। उसे वहां पर अब उनसे अलग महसूस होने लगा था। कहानी में दिखाई देता है कि जब स्त्रियां घर से बाहर होती है तो। उनके बीच

वैसा रिश्ता नहीं रहता है जिस तरह पहले होता था। पर परिवार में तनाव और अनभन आती है।

_3.2). कामकाजी महिलाओं की समस्या

आधुनिक युग में बदलते परिवेश के कारण स्त्रीयों के शिक्षा और नौकरी की दिशा में बदलाव आता हुआ दिखाई देता है। आज स्त्रियां काम पर जाती हुई दिखाई देती है। पर जब भी कोई स्त्री काम पर जाती यह पुरुषों को पसंद नहीं होता है वह स्त्रियों को घर के चार दीवारों में कैद करके रखना चाहते हैं। जिस तरह समाज उन्नति कर रहा है समाज में महंगाई भी बड़ने के कारण परिवार में पैसों की कमी का कारण बनता गया है। इसके कारण स्त्रियों को काम पर जाना पढ़ रहा है, पर उनको वहां काम पर पुरुषों की बुरी नजर का सामना करना पड़ता है, उन पर अत्याचार किया जाता है ,उनको सताया जाता है उनका शोषण किया जाता है। "कामकाजी नारी को कितना मानसिक तनाव झेलना पड़ता है। इसे मन्नू जी ने अपनी कुछ कहानियों में ईमानदारी में जिया है"[13] मन्नू भंडारी की कहानी 'एक खाने आकाश नाई' इस कहानी में जो नारी पात्र सुषमा है वह सोचती है कि उसका अगर घर बस जाए

तो वह अपने बारे में सोचेगी अपने जीवन में कुछ बदलाव लाएगी। किंतु उनके परिवार में उनके बारे में कोई सोचता नहीं था। जब वह ससुराल जाती है वह भी उसे नौकरी की आशा की जाती है सास ननंद की इन अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयत्न उसे भीतर तक तोड़ जाता है यह सुख के आकाश की इच्छा वह आराम से ही खोज रही थी वह उसे कोई भी तो नहीं मिल पाती भारतीय कामकाजी श्रमिक महिलाओं का यही दर्द है। सभी सिर्फ उनके पैसों से ही मतलब रखते थे उनके काम से ही मतलब रखते थे।कहानी में दिखाया गया है कि किस तरह एक शिक्षित महिला भी अपने जीवन में खुश नहीं रह सकती। दूसरों की अपेक्षा पूरी करते-करते वह अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाती है। यही श्रमभरा और दर्द भरा महिलाओं का जीवन होता है।

3.3) विवाह को लेकर स्त्रियों की समस्या

समाज में अगर विवाहित जीवन में एक दूसरे के लिए मान सम्मान और आदर ना हो तो उनका जीवन सुखी नहीं माना जाता है। एक सुखी विवाह जीवन जीने के लिए एक दूसरे को लिए मान सम्मान होना आवश्यक होता है। आधुनिक युग में

आते हुए हम देख सकते हैं स्त्रियों में विवाह संबंध में काफी टूटने की समस्या आती है। पति पत्नी में अनबन, प्रेम विवाह में असफलता होना, दहेज प्रथा,पैसों की कमी होने के क के कारण विवाह संबंध में समस्या आती हुई दिखाई देती है। मन्नू भंडारी की कहानी 'दरार बनने की दरार' में पति-पत्नी में मतभेद होता है। हर रोज उनकी बीच झगड़े होते हैं, इसके कारण उनका जीवन व्यतीत करने में उनको दिक्कत आती रहती है धीरे-धीरे उनके बीच वह एक दूसरे से दूरी बनाने लगते हैं फिर अंत में वह। एक दूसरे से दूर होने का निश्चय करते हैं। इसलिए विवाहित जीवन में एक दूसरे को समझना काफी आवश्यक होता है। नहीं तो विवाह असफल बन जाता है। दहेज की समस्या आज भी ग्रामीण परिवारों में दहेज दिया जाता है शादी के वक्त बड़ा-बड़ी गाड़ियां, सोना, आदि दहेज में मांगे जाते थे ना मिलने के कारण स्त्रियों पर अत्याचार किया जाता है। उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। दहेज के कारण उनके व्यवहारिक जीवन में अनभन आती है वैवाहिक जीवन असफल बनता है। सभी परिवार में दो रिश्तो को जोड़ने के लिए जबरदस्ती दो लोगों की शादी की जाती है। फिर उनके

जीवन में कठोरता आने लगती है और तीसरे का आना उनके जीवन में शुरू हो जाता है। "स्त्री-सुबोधिनी' कहानी में शिंदे का विवाह उसकी इच्छा के विरोध में हो गया है अतः वह किसी अविवाहिता से प्रेम करता है और अपने कर्त्तव्य-बोध का विस्मरण कराता है"[14]

कहानी में मन्नू भंडारी ने दिखाया है कि किस तरह शिंदे विवाहित होने के बावजूद भी एक अन्य पराई स्त्री से संबंध रखता है। और इसके कारण वह दोनों का इस्तेमाल करता है। और जब उसे लड़की के साथ विवाह करने को बोला जाता है तो वह पीछे हट जाता है । इस तरह उनके विवाह में अनबंध आती है और विवाह सुखी माना नही जाता हैं। विवाह के बाद संतान न होना यह भी एक समस्याएं अति है। स्त्रियों का विवाह करने के पश्चात उनसे। 1 साल पर ही संतान की अपेक्षा रखी जाती है। और अगर वह संतान प्राप्त करने में असफल रह जाती तो उसको दोषी ठहराया जाता है। और उन्हें बांझ कहा जाता है।

अगर समस्या चाहे पुरुष की भी हो फिर भी स्त्रियों को ही दोषी पता जाता है। पहले जमाने में अगर स्त्रियों को संतान

प्राप्त नहीं होता तो उनके बेटे कि दूसरी शादी की जाती थी स्त्रीयों को घर के काम करने को कहा जाता था पर आज बहु को सास ससुराल ताने दिए जाते है। और अगर उनको बच्चा गोद लेना चाहते है, तो समाज उनको रोकता हैं। और समाज में क्या नाम रहे गा यह सोच कर वह पीछे हटते हैं। यह समस्या उनके सामने आती है.।

3.4) अकेलेपन की समस्या

आधुनिक युग में अकेलेपन की समस्या काफी हद तक दिखाई देती हैं। पहली भी अकेलेपन की समस्या होती थी पर आधुनिक युग वह काफी हद तक बड़ने लगी है, आधुनिक युग में युवा पीढ़ी और बच्चों में फोन, लैपटॉप , टीवी ऐसे माध्यम आ जाने बच्चे और युवा पुराने खेल खेलना, परिवार में बातचीत करना यह सब कम होता जा रहा है , आजकल सब काम फ़ोन पर ही किया करते हैं इसके कारण उनको अनेक समस्या जेलनी पड़ती हैं जैसे की , “विशेष रूप से नगरों तथा महानगरों में तो इस समस्या ने मनुष्य के जीवन में घुटन, टूटन, रिक्तता, शून्यता तथा विवशता भर दी है। अतएव आज यह समस्या आधुनिक स्थिति की उपज के फलस्वरूप वैयक्तिक

होते हुए भी समाज के बृहद् हिस्से को प्रभावित करने के कारण सामाजिक समस्या का रूप धारण कर रही है। आज के बदलते युग और बदलते संदर्भ में कतिपय परिवारों के सदस्य इस समस्या के गुजर रहे हैं"[15] अकेलेपन के कारण मनुष्य अपने आप में खोए हुए रहता है वह अपने जीवन में घुटन महसूस करता है आज यह समस्या सामाजिक रूप से बढ़ती जा रही है। आधुनिक युग में हमे यह समस्या ज्यादा होती हुई दिखाई देती है।अकेलेपन की समस्या जाड़ा उन स्त्रियों को होती है जब परिवार में अकेली लड़की होती है जिसका माता-पिता काम पर जाते हैं तोह उनको अकेलापन सताने लगता हैं। रोग से जूझ रही है ऐसी स्त्रियों को भी अकेलेपन कि समस्या जाड़ा होती है। जब ऐसी समस्या उनके समक्ष आती है तब उनके पास और कोई रास्ता नही होता हैं तो वह हार कर आत्महत्या करती हैं। वास्तव में अकेलेपन तभी अनुभूत होता है जब व्यक्ति दूसरों के साथ सार्थक संबंध खो देता हैं।

डॉ माधवी जाधव अकेलेपन की समस्या के संदर्भ में कहते हैं की "अकेलेपन की समस्या-निर्माण का कोई एक ठोस कारण

नहीं है, अपितु इसके मूल में कई कारण कार्यरत हैं। वैज्ञानिक प्रगति, आधुनिक करण, नारी-जागरण और अस्मिता की पहचान, पारिवारिक विघटन, व्यक्तिवादी चेतना, आर्थिक असुरक्षा, नए-पुराने मूल्यों में संघर्ष, मूल्य-विघटन आदि के संयुक्त परिणामस्वरूप जिन विभिन्न समस्याओं का जन्म हुआ है, उनमें से अकेलेपन की समस्या आधुनिक जीवन का अभिशाप बनकर उभरने लगी है"।[6] अर्थात अकेलेपन की समस्या का कोई ठोस कारण नहीं होता अकेलेपन के जो समस्या का निर्माण है वह वैज्ञानिक प्रगति आधुनिकरण नई समस्या ऐसी समस्याओं के कारण अकेलेपन की समस्या पैदा होती है। मन्नू भंडारी की कहानी त्रिशंकु में भी हमें अकेलेपन की समस्या दिखाई देती है। त्रिशंकु कहानी में जो तनु है, वह अपनी मां की पुरानी सोच को समझ नहीं पा रही है। कहानी में तनु की मां हैं वह कभी पुरानी सोच में विचार रखती है और कभी आधुनिक सोच में इसके कारण तनु अपने आप को काफी अकेला महसूस करती है। इसकी अलावा 'एखाने आकाश नाई' की लेखा और 'रेत की दीवार' कहानी की चंदा को जब परिवार में कोई उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता था

परिवार में कोई भी इज्जत नहीं देता या, औरत को पराया धन समझा जाता है, तब वह अपने आप को अकेला महसूस करती हैं।

3.5)स्त्रियों की स्वतंत्रता

स्त्रियों की स्वतंत्रता का तात्पर्य यह नहीं है कि परिवार अथवा सामाजिक बंदों से मुक्त करना। स्त्री स्वतंत्रता का मुख्य रूप से मानी जाती है तब स्त्री जीवन में अपने निर्णय खुद से ले सके कोई भी उनके ऊपर अपने निर्णय थोपे न और वह रूढ़ियों और परंपराओं की गुलामी ना करके अपने जीवन में सुख से रहे अपने निर्णय खुद से लेने के में सक्षम होनी चाहिए। उसे स्त्री समस्या कहा जा सकता हैं। “यदि नारी अपने इस व्यक्ति स्वातन्त्रय को पा लेती है तो वह स्वंय को सार्थक अनुभव करती है, किन्तु अधिकांशः कहानियों में उसकी उस पीड़ा का बोध ही है, जो उसे अपने “स्व” को खोकर झेलना पड़ता है। उदाहरणतः “नयी नौकरी” की रमा “आपका बंटी” की शकुन, “एक बार और” की रंजना, “बंद दरबाजे को साथ” की मंजरी, नारी स्वतन्त्रता का यही स्वर इन कथाओं में मुखरित हुआ है”।[7] मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी

को स्वतंत्रता दिलाने की कोशिश की है। वह इन कहानियों से स्त्रियों की पीड़ा , और जो कठिनाये उनके समक्ष आती है उनको समाज के सामने लेखन से प्रस्तुत किया है।

"अमृता प्रीतम भी "नारी स्वातन्त्रय" की शत-प्रतिशत पक्षधर है। इसलिए वह नारी को स्वयंम से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार प्रदान करना चाहती है और इसके लिए परम्पराओं का उल्लंघन करना भी उन्हें स्वीकार है। तभी तो "नागमणि" की अलका स्वेच्छा से अपने प्रिय को बीस रुपये में शरीर देकर भी प्रसन्न है। अपने पिता द्वारा मनोनीत मंगेतर के समक्ष भी वह अपने प्रेम को स्वीकार करती है और मंगेतर जगदीश चन्द्र को अस्वीकार कर देती है और प्रेमी के मरने पर स्वेच्छा से उसके निवास स्थान पर जाकर एक विधवा के रूप में रहना पसन्द करती है और इसके लिए न तो अपने पिता से विचार विमर्श करती है न समाज के रीति-रिवाजों की चिन्ता करती है"।[8] अमृता प्रीतम कहती है कि हर नारी को अपना हक मिलना चाहिए उनको स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि वह स्वयं अपने निर्णय खुद से ले , और स्त्रियों को खुद अपना जीवन

साथी को चुनें का अधिकार होना चाहिए, इतनी स्वतंत्रता एक नारी को मिलनी चाहिए।

मन्नू भंडारी ने कहानियों के माध्यम से नारियों के संघर्ष को लेकर लेखन किया है। मन्नू भंडारी ने स्वयएम साक्षात्कार में स्वीकार ,किया है कि वह "नारी को उसकी घुटन से मुक्त करना चाहती हूं उसमें बोल्डनेस देखना चाहती हूं, यहां पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है की मन्नू भंडारी भी स्त्रीयों की स्वतंत्रता चाहती हैं। "आते जाते यायावर" में मिताली से उसका एक सहपाठी प्रेम के नाम पर शारीरिक संबंध स्थापित करता है किन्तु विवाह किसी अन्य युवती से करता है। फिर वह नरेन्द्र की ओर आकर्षित होती है किन्तु नरेन, जो स्वभाव से ही जिपूनी और यायावर है उसके साथ कैसे बँध सकता था। आखिर वह भी एक दिन मिताली का दिल तोड़ते हुए यह कहकर कि "इस आते जाते यायावर का नमस्कार" उसका दामन छोड़ जाता है और मिताली भी आपकी अन्य नायिकाओं- रंजना, बिन्नी के समान प्रेमी की धूर्तता का शिकार हो"[19]

उनकी एक कहानी 'तीसरा हिस्सा 'में भी स्त्रियों की समस्या दिखाई देती है जैसे क 'तीसरी हिस्सा 'इससे कहानी में शेर

बाबू की पत्नी ने पति की बोलती बन कर रखी है। यह सब अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखने के समर्थ नारी चरित्र है। “एक खाने आकाश नाई” में मुखरित हुआ है। इस कहानी में सुषमा सोचती रह जाती है कि घर थोड़ा जम जाये तो वह अपने लिये कुछ सोचे किन्तु परिवार में उसके विषय में कोई सोचना नहीं चाहता। वह शंकर के साथ विवाह की घोषणा करती है तो घर में कोहराम मच जाता है। किन्तु उसका दुर्भाग्य कि जब वह ससुराल जाती है तो वहाँ भी उससे नौकरी की आशा की जाती है सास ननद की इन अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयत्न उसे भीतर तक तोड़ जाता है, जिस बुख के आकाश की छहि वह आरम्भ से ही खोज रही थी वह उसे कहीं भी तो नहीं मिल पाती, भारतीय कामकाजी श्रमिक महिलाओं का यह दर्द है”। ‘एखाने आकाश नाई’ की जो सुषमा है वह कहती है कि जो उसका घर है उनकी वह अपेक्षा रखती है कि जब उनका घर ठीक से हो जाएगा तब वह अपने आप पर ज्यादा ध्यान देगी। उनका परिवार उसके बारे में जाड़ा नही सोचता है। उनको सिर्फ उनके पैसों से ही मतलब होता है। जब वह शादी करके ससुराल जाती है तब वह अपने पति और

उसके परिवार से अपेक्षा रखती हैं। ससुराल में भी सब नौकरी की ही आशा रखते हैं। यहां पर हमें पता चलता है कि। स्त्रियों को सिर्फ अपने जरूरत ही काम के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है उनके बारे में कोई नई सोचता है।

3.6) अविवाहित कामकाजी स्त्रियों की समस्या

परिवार मे जब पूरे घर का पालन पोषण करने के लिए कोई नहीं होता तो घर की स्त्रियों को काम पर जाकर परिवार को संभालना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं को अपने सुखी जीवन को छोड़कर परिवार की जिम्मेदारी उनके कंधे पर आती है, तो उसे स्त्री को अपने संसार बसने के लिए वक्त नहीं मिलता है ऐसी स्त्रियां अविवाहित रह जाती है। जब आयु बढ़ जाती है तो कोई भी उनको स्वीकार नहीं करता है। कामकाजी स्त्री जब अपने कामों में व्यस्त होती है तब उसे परिवार में उसके बारे में कोई नहीं सोचता क्योंकि अगर वह शादी करती है तोह परिवार को कौन पालन पोषण करेगा ऐसी सोच के कारण स्त्रियों का विवाह भी नही किया जाता हैं।

'स्त्री सुबोधिनी' इस कहानी में स्त्री है वह परिवार का पालन पोषण करती है कहानी में नारी की अविवाहित कामकाजी स्त्री

की व्यथा को दर्शाया गया है। कहानी में नायिका वह घर से दूर रहकर काम पर जाती है और पूरे घर को भी संभालती है पूरा परिवार उसकी कमाई पर जीता है ,कहानी में नायिका को शिंदे नामक व्यक्ति से प्रेम होता है। पर शिंदे की पहले से ही शादी हो चुकी थी। इसलिए उसे कुछ नहीं बताता है। जब नायिका को इसके बारे में पता चलता है तब शिंदे खुद ही उससे दूर रहने की कोशिश करता है। यह देखकर उसी को समझ में नहीं आता कि वह क्या करें, वह पूरी तरह से टूट जाती है ,शिंदे की हरकतों को देखकर वह अंदर से टूट जाती है, वह अपना सब कुछ खो देती है। कहानी में स्त्रियों के साथ जो जुल्म और अत्याचार हुआ है उसका चित्रण किया गया है। कहानी में दिखाया गया है कि किस तरह शिंदे जैसे पुरुष मासूम स्त्रियों का इस्तेमाल करते है और जब उसका काम हो जाता है तो उससे मुंह फेर लेते है। मन्नू भंडारी ने इस कहानी में कामकाजी अविवाहित स्त्रियों की दशा को दिखाया गया है। कई बार परिवार में स्त्रियों को अकेले ही काम करती है इसके कारण कोई भी स्त्री के उसके विवाह के बारे में नहीं सोचता सबको यही डर सताता है कि अगर उनकी बेटी का विवाह

होगा तो उनका पालन पोषण कौन करेगा इसके कारण स्त्रियां अविवाहित रह जाती है कुछ कामकाजी महिलाएं विवाहित घर के कामों व्यस्त रहती है, और उनका काम करना पसंद होता है, इसके कारण वह अकेली ही रहना पसंद करती है। यह स्त्रियां आत्मनिर्भर होती है वह किसी का सहारा नहीं लेना चाहती है।

'वर्तमान युग में नगरों और महानगरों में कामकाजी अविवाहित नारियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ने लगी हैं। परंतु इनकी आर्थिक स्वावलंबिता के कारण अनेक समस्याएँ भी सामने आ रही हैं। अब वे आर्थिक दृष्टि से किसी पर आश्रित नहीं हैं। नौकरी हेतु घर-परिवार से दूर रहती हैं। न कोई घर के लोगों का अंकुश रहता है और न वे किसी का अंकुश पसंद करती हैं'।[10]इसका अर्थात है आधुनिक युग की स्त्री अगर कामों में व्यस्त रहती हैं इसके कारण शादी का समय हो जाती है। तोह कामों में व्यस्त रहने के कारण वह शादी नहीं करती वह अविवाहित रह जाती है। कामकाजी औरतें किसी पर निर्भर नहीं रहती, अपना जीवन वह खुद की कमाई पर ही रहनी हैं। ऐसी स्त्रियां भी होती है जिन्हें प्रेम संबंधों में फसाया जाता

है। जैसे कि 'आते जाते यायावर' इस कहानी में नायिका मिताली प्राध्यापिका है। वह प्रेम में धोखा खा चुकी थी। और जब वह दूसरे लड़के की तरफ आकर्षित हुई तब धोखा मिलने के कारण वह किसी और से झूठ नहीं पाती है। ' एखाने आकाश नाइं' कहानी की नायिका सुषमा नौकरी करने के साथ पूरा घर भी संभालती है, उसकी बहन पिनकी बी ए पास कर ली तब वह अपने जीवन के बारे में सोचने लगी। सुषमा पूरे घर को अकेली है संभालती पर उसे भी लगता था कि उसका सुखी परिवार हो पर उसके परिवार में उसके बारे में कोई सोचता नहीं था इसके कारण सुषमा ने खुद ही अपने विवाह का निर्णय लेती हैं। तब सब परिवार उसका विरोध करते हैं। अर्थात कहानी में दिखाया गया है की सूचना बड़ी मेहनत करके काम जाति है इन सब का पालन पोषण करती है। सब समस्याओं से अकेली ही जूझती है ताकि किसी को परेशानी ना हो पर घर के सदस्यों को उससे कोई मतलब नहीं है। इस कहानी में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि मनुष्य के आत्मीय संबंध टूट गए हैं। मनुष्य सिफ अपने फायदे के लिए दूसरों का उपयोग करते हैं।

आज के जमाने में मनुष्य काफी स्वार्थी होता गया है और वह सिर्फ अपने बारे में ही सोचता रहता है।

3.7) महिलाओ में आदर की समस्या

आज हम आधुनिक युग में आ पहुंचे हैं। आज के युग की महिलाएं काफी प्रगति कर रही है। काम पर जा रही है। हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ना चाहती है, आज महिलाएं काम और परिवार दोनों ही संभालने में सक्षम होती है पर महिलाएं कहीं भी जाए उनको जितना आदर नही मिलता हैं जीतना मिलना चाहिए आज के समाज में पुरुष महिलाओं को समान अधिकार नहीं देते हैं। जब भी कोई स्त्री काम पर जाति हैं तो वहां पर पुरुषों से उनका अनादर किया जाता हैं। पुरुष हमेशा ही स्त्रियों को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। मन्नू भंडारी की कहानी 'स्त्री सुबोधीनी' में नारी का किस तरह अनादर किया है उसको दिखाया गया हैं। "'स्त्री-सुबोधिनी' कहानी में परिवार के भरण-पोषण मात्र के लिए मशीन बनी अविवाहित कामकाजी नारी की व्यथा है"।[11] 'स्त्री सुबोधिनी' कहानी में नायिका काम करती है और अपने परिवार की देखभाल करती है। और उसका परिवार में उसके लिए कोई आदर नहीं करता

है। उसके परिवार के लिए वह सिर्फ पैसे कमाने का साधन है। काम पर भी वह शादीशुदा शिंदे नामक व्यक्ति से प्रेम करती है। शिंदे सिर्फ उसको अपने फायदे के लिए उसका इस्तेमाल करता है , प्रेम का नाटक करता हैं उसको प्रेम में फसाता हैं। इस कहानी में हमें देखने को मिलता है कि स्त्रियों को घर पर भी कोई आदर नहीं मिलता और काम पर भी कोई आदर नहीं मिलता है।इस कहानी में मनु भंडारी ने स्त्रियों की दयनीय दशा को दिखाया गया है और यह भी बताया है कि किस तरह अन्य लोग उनका फायदा उठाते हैं ।

संदर्भ

1 जाधव माधवी डॉ,मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित स्त्री समस्याएं, विद्या प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2007, पुष्ट 16

2 भंडारी मन्नू, त्रिशंकु और अन्य कहानियां (कवि अजीत कुमार से एक अंतरंग बातचीत,'मन्नू के तमाम रंग)अक्षर प्रकाशन प्रा लि २/३६अनसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली प्रथम संस्करण१९७८ पुष्ट 166

3 वर्मा सुशील, डॉ,आधुनिक समाज की नारी चेतना, आशा पब्लिशिग कम्पनी,Hig-H24, बाईपास रोड़, कमलानगर, आगरा, संस्करण 1998. पुष्ट 15

4 जाधव माधवी, डॉ,मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित स्त्री समस्याये, विद्या प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2007, पुष्ट 45

5 वही पुष्ट 47

6 वही पुष्ट 49

7 वर्मा सुशील, डॉ,आधुनिक समाज की नारी चेतना , आशा पब्लिशिंग कम्पनी, कमलानगर, आगरा संस्करण 1998

8 वहीं पुष्ट 111.

9वहीं पुष्ट 151

10 जाधव माधवी, डॉ,मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्याये, विद्या प्रकाशन सी 449, गुजैनी कानपुर प्रथम संस्करण 2007,पुष्ट135

11 वहीं पुष्ट 135

4 चतुर्थ अध्याय: मन्नू भंडारी की भाषा शैली

भाषा एक ऐसा साधन होता है जिसके माध्यम से हम अपने अनुभवों और विचारों की अभिव्यक्त करते हैं। लेखक के लिए भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वह अपनी संवेदनाओं को पाठक वर्ग तक पहुंचना है। शोधार्थी अर्चना शर्मा मन्नू भंडारी के बारे में कहती हैं कि "मन्नू भंडारी ने अपने साहित्य में जिस भाषा का वरण किया है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि वहाँ जनसामान्य के जीवन का अन्तर्नाद सुनाई देता है। मनुष्य अपने जीवन संघर्षों के सामने जीवन का मधुर राग भूल गया है। अब उसकी प्रभाती वीणा की मधुर ध्वनि से नहीं, बल्कि अखबार वाले एवं दूधवाले की खिच-खिच से ध्वनित होती है। इसी ध्वनि की प्रतिध्वनि मन्नू भंडारी के साहित्य में रोजमर्रा की जीवंत भाषा के रूप में सुनाई देती है"।[1]उनका कहना है कि मन्नू भंडारी ने भाषा के क्षेत्र में साहित्य को चुना है। पर वह कहती है कि आज मनुष्य अपने संघर्ष में अपना मधुर राग को भूल गया है,आज मनुष्य अपना जीवन खुशी से व्यथित नहीं कर रहा है। मनुष्य अपने जीवन में सुरीलेय धवनियो से भाषा नहीं सिखता बल्कि वह रोजमरा

की जिंदगी में, अखबार वाले की, दूध वाले की खिच- खिच से ध्वनि बनाते है, इन ध्वनियों का प्रतिनिधित्व मन्नू भंडारी के साहित्य में रोजमर्रा जीवन में भाषा के रूप में सुनाई देती हैं।

4.1.) भाषा

मन्नू भंडारी की भाषा काफी सरल बोलचाल की भाषा है उर्दू ,फारसी एवं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग तथा कभी-कभी संस्कृत भाषा का भी प्रयोग वह अपनी भाषा में करती है। उनकी भाषा में मुहावरे ,संवाद लोकोक्तियां तथा शब्दों का भी समावेश है। उनकी भाषा में तत्सम, तद्भव, देशी ,विदेशी अंग्रेजी ऐसी भाषा होती है जोह पाठक को पढ़ने में रुचि पढ़ा करती है, उनकी जो भाषा है वह विषय के अनुसार बदलती रहती है। उनकी कहानियों की भाषा इतनी सरल होती है कि पढ़ने वालों को ऐसा लगता है कि वह खुद जिंदगी में जो घटित होता है उसे पर वह लिखती है और उनको वह अपने असल जिंदगी में महसूस कर पाते हैं। उनकी रचनाएं काफी स्पष्ट रूप से लिखी हुई होती है। जो पाठक को पढ़ने में रुचि पैदा करती है। मनुष्य के पास अभिव्यक्ति के जितने भी साधन हैं उनमें सबसे अधिक समर्थ, नमनीय एवं रमणीय साधन भाषा है।

कविता में भाषा अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख तत्व है।मन्नू भंडारी की भाषा के विषय में उर्मिला शिरीष कहती हैं "मन्नू जी की भाषा को पढ़ते हुए हर बार यही महसूस होता रहा है कि भाषा वह जो भावनाओं को अनेक रंगों में रंगती है, जो भावनाओं को संप्रषित करने में अहम् भूमिका निभाती है, जो पात्रों के व्यक्तित्व को उद्भाषित करती है... जो जड़ चीजों में भी प्राण डाल देती है और सांकेतिक रूप से वह सब कर देती है जो तमाम शब्दों में भी नहीं कहा जा सकता है"।[2] मन्नू भंडारी की जो भाषा है सबको भावनाओं में रंग की हुई दिखाई देती है। उनकी भाषा काफी सरल सच और बोलचाल की भाषा है। वह अपनी भाषा से पाठक के व्यक्तित्व को उभरती है। निम्नलिखित कहानियों में शब्दों का प्रयोग

4.1.1)उर्दू शब्दों का प्रयोग-

शादी, नसीब, जवाब, गवाह , नफरत ,निहायत,जिम्मा शराफत ,बलाहट , महफूज। शक्ल, ज़मीन, अनाज, ऐसे शब्दो को लिया गया हैं।(त्रिशंकु कवि अजीत कुमार के साथ अंतरंग बातचीत भी)

4.1.2)सयुक्त शब्दों का प्रयोग

भाषा में सुधार लाने के लिए सयुक्त शब्द का प्रयोग किया गया जैसे की ,उतार -चढ़ाव ,खुली- फैली ,पत्र - वत्र आते-जाते , गुनती- बुनती . ऐसे शब्दो को लिया गया हैं।

4.1.3)पुनरुक्ति शब्द- कभी-कभी नए-नए लोग- लोग, नहीं - नहीं साथ-साथ, करीब-करीब, जाते - जाते ऐसे शब्द इस्तमाल किए जाते हैं।

4.1.4)अंग्रेजी के शब्द -

अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भाषा के साहित्य में किया जाता है। अंग्रेजी शब्द वाक्य के हिसाब से और देश के हिसाब से भी बदला जा सकता है मन्नू भंडारी के तमाम रंग ,इस संग्रह कहानी अंग्रेजी शब्द लिए गए हैं जैसे की फिल्म ,वन ट्रैक माइंड हु फॉक्स , ब्रिलियंट ,आइडिया ऐसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है। जब भी मन्नू भंडारी लेखन कार्य करती थी तो वह अंग्रेजों के शब्दों वैसे की वैसे ही लेती थी क्योंकि उनका अनुवाद नहीं होता था, यह उनका अर्थ नहीं मिल पाता था इसके कारण अंग्रेजी शब्द वैसे ही लिए जाते थे।

4.1.5) मुहावरे

मुहावरे एक प्रकार की आलंकारिक भाषा हैं, वे हमारे लेखन को और अधिक रोचक बनाने में मदद कर सकते हैं। मुहावरे से वाक्य के शाब्दिक अर्थ को जाना जाता हैं। जैसे कि उसकी आकृति धुंधली हुई, एक निहायत ही पिटा पटाया वाक्य, मेरा अहं बुरी तरह तिलमिला गया, बात करने के लिए शब्द टटोल रही हैं।

4.1.6)अपशब्द

तीसरा हिस्सा यह कहानियों में आप शब्दों का प्रयोग किया गया हैं जैसे की नालायक, बदतमीज, हारामी आदि।

4.2)शैली:

मन्नू भंडारी की 'त्रिशंकु' कहानी में अलग-अलग शैलियों का प्रयोग किया है जैसे की वर्णनात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, संवादात्मक शैली आदि मन्नू भंडारी ने रचनाओं में विविध शैलियों को का इस्तेमाल करके भाषा को सरल और सहज बनाया है। कथा-साहित्य में भाषा का अत्यधिक महत्त्व है। बिना भाषा के कथा-साहित्य अधूरी रह जाएगा। भाषा के बिना साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती। रचनाकार को उसके साहित्य कृति के अंतर्गत जो कुछ भी कहना होता है, वह

भाषा के माध्यम से ही कहता है और इसी माध्यम का आश्राय लेकर पाठक रचनाकार के उद्देश्य से अपना अंतरंग स्थापित कर लेता है। सभी रचनाओं में भाषा का रूप एक सा न होकर भिन्न-भिन्न प्रकार का रहता है। उद्देश्य, कच्य, बाताबरण तथा विषय के अनुसार भाषा का अपना एक स्तर होता है जो रचनाकार की शैली के अनुरूप व्यक्त होता है।

4.2.1)विवरणात्मक शैली

विवरणात्मक शैली में घटनाक्रम का क्रम बंद विवरण प्रस्तुत करता है इसका लेखक पाठक अपनी भावनाओं को अलग रखकर विषय वस्तु का विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें पाठक जैसे देखा या सुनता है वैसा ही विवरण प्रस्तुत करता है। जैसे: "लेखक निर्जीव और निष्क्रिय होता गया, मेरे भीतर की स्त्री सजीव होती चली गई, अपना पूरा वजूद पाते ही उस स्त्री के लिए न साथ रहना संभव रह गया था"।[3]

4.2.2)वर्णनात्मक शैली

मन्नू भंडारी की हिंदी आत्मकथा में काफी वर्णनात्मक शैलियों का प्रयोग किया गया है जिसमें। घटना, स्थान,वस्तुओं का भी चित्रण किया हुआ दिखाई देता है जैसे की। "वहाँ निहायत

अव्यवस्थित ढंग से फैली बिखरी पुस्तकों-पत्रिकाओं और अखबारों के बीच वे या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर 'डिक्टेशन' देते रहते थे"। [4]

"सवेरे नींद खुली, तो धूप कमरे में भर गई थी। बच्चों के बिस्तर सिमट गए थे । नीचे से माला और बच्चों की मिली-जुली आवाजें आ रही थीं । भरी धूप में उसे यह कमरा कुछ नया-नया लगा । उसने जोर की अंगड़ाई ली और एक सिगरेट सुलगा ली"।4

4.2.3) संवाद शैली

संवाद शैली किसी भी नाटक या कहानी का प्राण तत्व होता है और नाटक या कहानी में संवाद होता ही है। सवा छोटे या बड़े भी होती है मन्नू भंडारी की कथा साहित्य में संवादों का काफी इस्तेमाल करती है संवाद के उदाहरण: "यह सब आप क्या कह रही हैं श्रुति दी ? इतना बड़ा कारण भी तो होना चाहिए । आप अलग रह सकेंगी ? विभु दा राजी होंगे इसके लिए ?"

"नहीं होंगे तो हो जायेंगे। पर इस बार मैं मकान तय करके ही उनसे बात करूँगी । बस, तू मुझे मकान ढूंढ़वा दे । मकान

के लिए यहाँ जैसी भाग-दौड़ करनी होती है, वह मुझ से नहीं होगी ! नंदी, अब तो मैं बहुत-बहुत थक गयी हूँ !

और सचमुच ही वे निढाल-सी हो कर गोल तकिये के सहारे लेट गयीं और दोनों हाथ आँखों पर रख लिये"। ५ (दरार भरने की दरार)

"इस बार जाऊँगा, तो जरूर मिलेंगा उससे । अब मिलना शायद और भी आगे बढ़ अच्छा ही लगेगा"।

"आप वापस कब जाएँगे ?" स्वर में आई उत्सुकता को भरसकते हैं कि उन्हें सि दबाते हुए मैंने कुछ ऐसी लापरवाही से पूछा, मानो इसके उत्तर से मेरा नहीं। और मैं भी कोई सम्बन्ध ही न हो।

"परसों यहाँ से कलकत्ते जाऊँगा और वहाँ से फिर पन्द्रह को मास्को के लिए उड़ना है"।[6] संवाद कहानियों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। मन्नू भंडारी के कहानियों के संवाद में कथावस्तु को विस्तार देने वाले संवाद है, और कहानी में उद्देश्य को उजागर करने वाले संवाद है। मन्नू भंडारी की कहानीया जैसे 'एक कमजोर लड़की' और 'त्रिशंकु' में संवादो का विस्तार दिया गया है।

4.2.4 व्यंग्यात्मक शैली

"मानव जीवन के विविध पहलुओं की वास्तविक व्यंजना के लिए व्यंग्य सबसे उपयुक्त माध्यम है।व्यक्ति और समाज की दुर्बलताओं एवं उनके कथनी-करनी में अंतर को बड़े ही बुद्धिमत्ता के साथ ऐसे शब्द-संकेतों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है कि वह व्यक्ति या समाज उपहास्यास्पद बन जाता है। व्यक्ति एवं समाज की कुरुपता और विसंगतियों को दिखाने की सर्वोत्तम शैली व्यंग्य है"।[7]

4.2.5आत्मकथात्मक शैली

मन्नू भंडारी ने अपनी साहित्य में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है उनकी आत्मकथा है ' एक कहानी यह भी' है इस आत्मकथा में उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण घटनाएं उनका उल्लेख किया है मन्नू ने इस आत्मकथा में व्यक्तिगत प्रतिबिंब और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को शामिल किया है। प्रोफेसर शिवाजी देवर मन्नू भंडारी के बारे में कहते है कि "मन्नू भंडारी ने अपनी इस आत्मकथा मैं अपनी रचना-प्रक्रिया का परिचय दिया है। किसी घटना, पात्र, स्थिति, आइडिया पर तुरन्त कहानी न लिखकर उसे मन और डायरी

दोनों जगह अंकित कर लेती है। समय गुजरने के बाद उसमें रोएँ-रेशे उभरने है"।[8] अर्थात मन्नू भंडारी के जीवन में जब भी कोई घटनाए, स्थिति जीवन में गड़ती है तो वह तुरंत अपनी आत्मकथा में या डायरी में लिखा करती थी । उनके लेखन करने का तरीका भावात्मक होता है उनकी आत्मकथा में मन्नू भंडारी ने जीवन के सत्य को उजागर किया है।

संदर्भ

1 शर्मा अर्चना,मन्नू भंडारी का रचना संसारः सरोकार एवं विमर्श, गोवा विश्वविद्यालय गोवा ,फरवरी-2022, पुष्ट308http://irgu.unigoa.ac.in/drs/bitstream/handle/unigoa/6694/sharma_a_2022.pdf?sequence=1&isAllowed=y

2 सं. भारद्वाज प्रेम, पाखी पत्रिका, वर्ष 08, अंक 4,जनवरी 2016 पृ.सं. 110

3 प्रो देवरे शिवाजी, हिंदी आत्मकथा मन्नू भंडारी, मेत्रीय पुष्पा, प्रभा खेतान,विद्या प्रकाशन सी449, गुजायनी कानपुर सस्करण प्रथम 2016, पुष्ट 70.

4 भंडारी मन्नू ,त्रिशंकु और अन्य कहानियां, अक्षर प्रकाशन अनसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 1679 , पुष्ट 75

5 वहीं पुष्ट 55

6 वही पुष्ट 66

7 शर्मा अर्चना ,भंडारी का रचना संसारः सरोकार एवं विमर्श, गोवा विश्वविद्यालय गोवा फरवरी-2022,

पुष्ट308http://irgu.unigoa.ac.in/drs/bitstream/handle/unigoa/6694/sharma_a_2022.pdf?sequence=1&isAllowed=y पुष्ट 342

8 भंडारी मन्नू,त्रिशंकु और अन्य कहानियां, अक्षर प्रकाशन अनसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 1679 ,पुष्ट27

उपसंहार

मन्नू भंडारी स्वतंत्र काल की संवेदनशील चिंतनशीलता का समाधान की लेखिका है। उन्होंने अपने साहित्य में अपनी कहानी के माध्यम से स्त्रीयों की समस्या का चित्रण किया है। उनके कहानियों के माध्यम से वह स्त्रियों पर हो रहे शोषण ,अत्याचार अन्याय पर लिखा करती है। मन्नू भंडारी के सपने साहित्य में महान लेखिका बनने का कारण उनका परिवार है ,उन्होंने अपने पिताजी सुखसंपत राय से प्रेरणा ली इसके कारण वह अपने जीवन स्त्रीयों की शिक्षा, उनको न्याय दिलाने में राजनीति अपना योगदान देने लगी मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व सीधा और सरल है। पर उनकी लेखन शैली अन्य विद्वानों से अलग है मन्नू भंडारी को व्यक्ति, परिवार, समाज, राजनीति, धर्म, प्रशासन, शिक्षा आदि क्षेत्रों में पनपती-उभरती समस्याओं ने आलोड़ित किया है। मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिक स्त्री समस्या यह विषय काफी महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसमें कहानियों में स्त्रियों की समस्या के बारे में विस्तार से बताया गया है । अपनी उन कहानियों में वह स्त्रियों को विशेष महत्व देती हुई दिखाईं देती हैं।

मन्नू भंडारी में विविध कहानियों में स्त्रियों की समस्याओं को दिखाया गया है। जैसे की 'त्रिशंकु' कहानी में स्त्रियों की अकेलेपन की समस्या। 'स्त्री सुबोधिनी' कहानी में प्रेम विवाह में तनाव ,दरार आदि समस्या। 'दरार बनने की दरार' कहानी में प्रेम का असफल होने का समस्या मन्नू भंडारी उन समस्याओं का चित्रण करती है घरेलू जीवन में होती रहती है जिसके बारे में कोई बात नहीं करता। घरों में स्त्रियों पर शोषण होता है,स्त्री और पुरुष में अनभन आती है,गरीबी की समस्या ऐसी समस्या होती हैं। मन्नू भंडारी ने कहानियों में पारिवारिक और दांपत्य संबंध पर अधिक विस्तार से प्रकाश में डाला है। लेखिका कहानियों के माध्यम से अकेलेपन की समस्या, परिवार में संबंध टूटने की समस्या, कामकाजी और अविवाहित स्त्रियों की समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है। कामकाजी नारी की समस्या भी दिखाई देती है जैसे ' स्त्री सुबोधिनि' यह कहानी में उनकी समस्या अपने काम से जुड़ी समस्या नहीं होती बल्कि निजी जीवन तथा परिवार से जुड़े समस्या होती है।

कामकाजी स्त्रियों की समस्या पर जहां स्त्रियों के अस्तित्व उसके चरित्र पर हमेशा सवाल उठाया जाता है। प्रेम संबंध में संबंध टूटने भी करने की समस्या, दहेज की समस्या, स्त्री शोषण, स्त्री अत्याचार। उनके कहानी के विविध पात्र समाज में चल रहे द्वन्द्व को अपने चरित्र के जरिए उजागर करते हैं। जिस तरह पुरुषों की सोच होती है उनको बदलने का प्रयास मन्नू ने किया है,मन्नू भंडारी के की भाषा काफी सरल बोलचाल की भाषा है। वह उर्दू ,फारसी एवं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करती है वह अपने रचनाओं में कभी व्यंग्यात्मक शैली लिखती तो कभी सरल भाषा का प्रयोग करती है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के शोषण और नारी के करूंन व्यथा को दर्शाया है। मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री का समर्थन करती है उनका उद्देश्य पुरुषों को नीचा दिखाने का नहीं है। बल्की वह स्त्री और पुरुष में समानता लाने का प्रयास करती है। उनका पूरा साहित्य स्त्री और पुरुष के बीच समन्वय की अपेक्षा रखता है।

स्त्री चाहे पहले के युग की हो या आधुनिक युग की हर स्त्री को संघर्ष करना ही पड़ता है अपनी हक के लिए उसे लड़ना

ही पड़ता है। यह एक मुख्य तौर की समस्या बन चुकी है। मन्नू भंडारी अपनी कहानियों में स्त्रियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है। उनका यही कहना था कि न कभी अन्याय करना चाहिए और न अन्याय सहना भी नहीं चाहिए। और अपने हक के लिए हमेशा लड़ना चाहिए। यही उद्देश मन्नू भंडारी अपनी कहानियों में देती है।

संदर्भ

1भंडारी मन्नू,'तीन निगाहों की एक तस्वीर', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी -17 जगपूरी दिल्ली, संस्करण 2001

2 भूमिका पटेल डॉ ,मन्नू भंडारी का कथा साहित्य: संवेदना और शिल्प आवास विकास हंसपुरम कानपुर प्रथम संस्करण 2012

3 .मालती डॉ.के, स्त्री विमर्श :भारती परिप्रेक्ष्य वाणी प्रकाशन, दरियागंज ,नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2010

4 शर्मा नासिरा, औरत के लिए औरत , सामयिक प्रकाशन। जड़वाड़ा नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली संस्करण प्रथम ,2003

5 शर्मा सुशीला, नारी अस्मिता और मेत्रीयि पुष्पा, विशाल पब्लिकेशन पटना, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010

6 गुप्त मानमनाथ, स्त्री पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास ,वाणी प्रकाशन, दरियागंज ,नई दिल्ली, संस्करण 2005

7 भंडारी मन्नू ,'त्रिशंकु' और अन्य कहानियां, वाणी प्रकाशन ६१,कमला नगर दिल्ली ,१६७९

8 जाधव माधवी डॉ,मन्नू भंडारी के साहित्य में चित्रित समस्याये, विद्या प्रकाशन सी- 449,गुजनी कानपुर 22, 2007

9 हांडे राव गुलाब ,मन्नू भंडारी का कहानी साहित्य, विज्ञान विहार गांधीनगर कानपुर द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण 1997

10 डॉ प्रसाद शुक्ल शिव ,पुस्तक वैश्वीकरण एवं हिंदी गद्य साहित्य अमय प्रकाशन 6A- 540 आवास विकास हसपुराम कानपुर 21 , संस्करण प्रथम 2010

12 शर्मा सरोजिनी, आधुनिक कहानी संग्रह ,केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

13 वर्मा सुशील, डॉ आधुनिक समाज की नारी चेतना, आशा पब्लिशिंग कम्पनी बाईपास रोड, कमलानगर आगरा, संस्करण 1998.

14 भंडारी मन्नू,'एक कहानी यह भी', राधाकृष्ण प्रकाशन स्पष्टीकरण से

15 देवरे शिवाजी प्रो०,हिंदी आत्मकथा मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा प्रभा खेतान, विद्या प्रकाशन, प्रथम 2016.

16 वर्मा सुशील, डॉ,आधुनिक समाज की नारी चेतना, आशा पब्लिशिंग कम्पनी बाईपास रोड, कमलानगर आगरा, संस्करण 1998

17 • साक्षात्कार

६१ त्रिशंकु कहानी में मन्नू भंडारी की स्त्री दृष्टि(NCERT OFFICIAL) www.youtube.com

मन्नू भंडारी सा साक्षात्कार पार्ट1 (NCERT OFFICIAL) www.youtube.com

शोध उपाधि के लिए गए शोध कार्य

18 जेनेट बर्जिस श्रीमती, प्रभा केतन का उपन्यास संसार नारीवादी विमर्श, हिंदी विभाग गोवा विश्वविद्यालय की पीएचडी उपाधि के प्रति प्रस्तुत शोध प्रबंध 2013.

19. पाण्डेय किरण,कृष्णा सोबती की कथा साहित्य में आधुनिक बोथ और नई गोवा विश्वविद्यालय हिंदी विभाग में पीएचडी उपाधि के लिए प्रस्तुत 2002

20. उषा अग्रवाल ,श्रीमती,मन्नू भंडारी का कथा साहित्य मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी कला संकाय हिंदी विभाग के अंतर्गत डॉक्टर का फिलासफी 1989

21.चौधरी पारस , मन्नू भंडारी और उषा प्रियवादा की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध निदेशक डॉक्टर अर्जुन के तड़वी एसोसिएट प्रोफेसर एव अध्यक्ष हिंदी विभाग और श्रीमती पी के कोटावला आदर्श कॉलेज पाटन गुजरात, दिसंबर 2016